रजिस्ट्री सं. डी.—(डी एन)—73

REGISTERED NO. D—(DN)—73

भारत का राजपत्र

The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 12] नई दिल्ली, शनिवार, मार्च 19, 1983 (फाल्गुन 28, 1904)

No. 12] NEW DELHI, SATURDAY, MARCH 19, 1983 (PHALGUNA 28, 1904)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।

(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

विषय-सूची

	पृष्ठ
भाग I—खंड 1—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए संकल्पों और असांविधिक आदेशों के संबंध में अधिसूचनाएं	287
भाग I—खंड 2—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) द्वारा जारी की गयी सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों आदि के संबंध में अधिसूचनाएं	375
भाग I—खंड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए संकल्पों और असांविधिक आदेशों के संबंध में अधिसूचनाएं	—
भाग I—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गयी सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों आदि के संबंध में अधिसूचनाएं	327
भाग II—खंड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	*
भाग II—खंड 1-क—अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ	*
भाग II—खंड 2—विधेयक तथा विधेयकों पर प्रवर समितियों के बिल तथा रिपोर्ट	*
भाग II—खंड 3—उप-खंड (i)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियम (जिनमें सामान्य स्वरूप के आदेश और उपविधियां आदि भी शामिल हैं)	703
भाग II—खंड 3—उप-खंड (ii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं	150
भाग II—खंड 3—उप-खंड (iii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (जिनमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियमों और सांविधिक आदेशों (जिनमें सामान्य स्वरूप की उपविधियां भी शामिल हैं) के हिन्दी में प्राधिकृत पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खंड 3 या खंड 4 में प्रकाशित होते हैं)	107
भाग II—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए सांविधिक नियम और आदेश	131
भाग III—खंड 1—उच्चतम न्यायालय, महालेखा परीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेलवे प्रशासनों, उच्च न्यायालयों और भारत सरकार के संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा जारी की गयी अधिसूचनाएं	5179
भाग III—खंड 2—पैटेन्ट कार्यालय, कलकत्ता द्वारा जारी की गयी अधिसूचनाएं और नोटिस	173
भाग III—खंड 3—मुख्य आयुक्तों के प्राधिकार के अधीन अथवा द्वारा जारी की गयी अधिसूचनाएं	—
भाग III—खंड 4—विविध अधिसूचनाएं जिनमें सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गयी अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं	1921
भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी निकायों द्वारा विज्ञापन और नोटिस	47
भाग V—अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में जन्म और मृत्यु के आंकड़ों को दिखाने वाला अनुपूरक	*

*पृष्ठ संख्या प्राप्त नहीं हुई

1—501 GI/82

CONTENTS

	PAGE
PART I—SECTION 1.—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) ..	287
PART I—SECTION 2.—Notifications regarding Appointments, Promotions, etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence)	375
PART I—SECTION 3.—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence	—
PART I—SECTION 4.—Notifications regarding Appointments, Promotions, etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence	327
PART II—SECTION 1.—Acts, Ordinances and Regulations	*
PART II—SECTION 1-A.—Authoritative text in the Hindi Language of Acts, Ordinances and Regulations	*
PART II—SECTION 2.—Bills and Reports of the Select Committee on Bills	*
PART II—SECTION 3.—SUB-SEC. (i).—General Statutory Rules (including orders, bye-laws, etc. of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories) ..	703
PART II—SECTION 3.—SUB-SEC. (ii).—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories) ..	150
PART II—SECTION 3—SUB-SEC. (iii).—Authoritative texts in Hindi (other than such texts published in Section 3 or Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules and Statutory Orders (including byelaws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (including the Ministry of Defence) and by General Authorities (other than Administrations of Union Territories)	107
PART II—SECTION 4.—Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence	131
PART III—SECTION 1.—Notifications issued by the Supreme Court, Auditor General, Union Public Service Commission Railway Administrations, High Courts and the Attached and Subordinate Offices of the Government of India	5179
PART III—SECTION 2.—Notifications and Notices issued by the Patent Office, Calcutta ..	173
PART III—SECTION 3.—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	—
PART III—SECTION 4.—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	1921
PART IV—Advertisements and Notices by Private Individuals and Private Bodies	47
PART V—Supplement showing statistics of Birth and Deaths etc. both in English and Hindi ..	*

*Folio Nos. not received

भाग I—खण्ड 1
PART I—SECTION 1

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बंधित अधिसूचनाएं

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 26 जनवरी 1983

सं० 13–प्रेज/83—राष्ट्रपति निम्नलिखित व्यक्तियों को उनके असाधारण वीरता के कार्यों के लिए "कीर्ती चक्र" प्रदान किए जाने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :–

1. ब्रिगेडियर सोमप्रकाश झिंगन (आई० सी०–8424) इन्फैन्टरी

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 25 मई, 1981)

ब्रिगेडियर सोमप्रकाश झिंगन ने 11 फरवरी, 1981 को एक माउंटेन ब्रिगेड की कमान सम्भाली जिसे राष्ट्र विरोधी गतिविधियों से निपटने के लिए तैनात किया गया था। पदभार सम्भालने के तुरन्त बाद उन्होंने अपने कार्यक्षेत्र का व्यापक निरीक्षण किया और स्थिति का जायजा लेने के बाद राष्ट्र विरोधियों के खिलाफ बार-बार तेजी से भली-भांति समन्वित कार्यवाहियों के करने में उच्च स्तर की व्यावसायिक दक्षता का प्रदर्शन किया। राष्ट्रविरोधी गतिविधियों से निपटने के काम में संलग्न सभी एजेंसियों के बीच निकट सहयोग की जरूरत महसूस करते हुए उन्होंने अर्द्ध-सैनिक बलों, अन्य खुफिया एजेंसियों, नागरिक प्रशासन और राजनैतिक नेताओं के साथ पूर्ण तालमेल रखा जिससे इलाके में राष्ट्रविरोधी गतिविधियों से निपटने में अधिक से अधिक कार्यवाही का प्रयास किया गया। उनके गतिशील नेतृत्व, उत्कृष्ट आयोजन और राष्ट्रविरोधी गतिविधियों से निपटने में जोरदार कार्यों के परिणामस्वरूप उनकी ब्रिगेड अनेक कट्टर उग्रवादियों और विभिन्न राष्ट्रविरोधी ग्रुपों के शीर्ष नेताओं को पकड़ने में सफल रही।

25 मई, 1981 को एक सुसंचालित कार्यवाही में उनकी ब्रिगेड ने अपने आप को सी-इन-सी बताने वाले एक व्यक्ति और एक सक्रिय राष्ट्रविरोधी ग्रुप के दो कट्टर सदस्यों को उनके शस्त्रों तथा गोला-बारूद सहित पकड़ लिया। इस कार्यवाही के परिणामस्वरूप यह उग्रवादी संगठन टूट गया। दिसम्बर 1981 से जनवरी 1982 के बीच उन्होंने कार्यवाही तेज कर दी जिसके फलस्वरूप पीपुल्स लिब्रेशन आर्मी/पीपुल्सरिवोल्यूशनरी पार्टी आफ कांगलोई पाक/कांगलोई पाक कम्युनिस्ट पार्टी के सत्तर से अधिक कट्टर सदस्यों को खत्म कर देने/पकड़ लेने में और भारी मात्रा में हथियार और गोला-बारूद पर कब्जा करने में सफलता मिली। (इन व्यक्तियों में एक झड़प होने पर कांगलोई पाक की पीपुल्स रिवोल्युशनरी पार्टी का शीर्ष नेता खन्दरोन शांति भी शामिल था)। 27 जनवरी, 1982 को उन्होंने और उनके रक्षक दल ने एक साहसिक मुठभेड़ में पीपुल्स लिब्रेशन आर्मी के जेल से भागे दो कट्टर उग्रवादियों को पकड़ने में सफलता प्राप्त की। इनको पकड़ने/पकड़वाने के लिए 15 हजार रुपए का इनाम घोषित था।

13 अप्रैल, 1982 को ब्रिगेडियर सोमप्रकाश झिंगन ने केडोमपोकमी में पीपुल्स लिब्रेशन आर्मी के सदरमुकाम पर योजनाबद्ध तरीके से हमले का नेतृत्व किया। इस कार्यवाही के दौरान वे सबसे आगे रहे और उनकी देखरेख में गांव की घेराबन्दी कर ली गई। गांव में फंसे उग्रवादियों की लगातार गोलीबारी के बावजूद उन्होंने बड़े धैर्य और साहस का प्रदर्शन किया और अपने साथियों का लगातार दबाव बनाये रखने के लिए प्रेरित किया। इस कार्यवाही के परिणामस्वरूप अनेक विरोधियों को या तो खत्म कर दिया गया था या पकड़ लिया गया। इस कार्यवाही की सफलता ने पीपुल्स लिब्रेशन आर्मी पर गहरी चोट की।

ब्रिगेडियर सोमप्रकाश झिंगन ने इस प्रकार अनुकरणीय साहस, नेतृत्व, व्यावसायिक कुशलता और अति उच्च कोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

2. श्री सुरिन्दर सिंह, असिस्टेन्ट सिविलियन स्टाफ अफसर, थलसेना मुख्यालय (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 16 अक्तूबर, 1981)

थल सेना मुख्यालय में जनरल स्टाफ ब्रांच, सैनिक प्रशिक्षण निदेशालय में असिस्टेंट सिविलियन स्टाफ अधिकारी श्री सुरिन्दर सिंह छुट्टी के दौरान चंडीगढ़ में पंजाब सचिवालय में नियुक्त अपने भाई आई० ए० एस० अफसर श्री निरंजन सिंह के पास गए थे। 16 अक्तूबर, 1981 को वे अपने भाई के साथ सचिवालय गए। सचिवालय में दाखिल होते समय कुछ बदमाशों ने श्री निरंजन सिंह को उनकी हत्या करने के ध्येय से एक ओर ले गए। श्री सुरिन्दर सिंह ने इस कातिलाना हमले को विफल करने की बहादुरी से कोशिश की। बदमाशों को श्री निरंजन सिंह पर निशाना लगाते देखकर श्री सुरिन्दर सिंह उनकी ओर लपके ताकि वे उनमें से एक बदमाश को पकड़ सकें। बदमाश श्री सुरिन्दर सिंह की ओर मुड़े और बड़ी नजदीकी से उन पर गोली चलाई जिससे तत्क्षण उनकी मृत्यु हो गई।

श्री सुरिन्दर सिंह की उत्कृष्ट वीरता का कारनामा, जिसमें उन्होंने अपने प्राणों की आहुति देकर एक अन्य के जीवन की रक्षा की, पुरस्कृत करने योग्य है।

3. स्क्वाड्रन लीडर विश्वनाथ नागराजन (8753)
फ्लाईंग (पाइलट)
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 08 जुलाई, 1982)

08 जुलाई, 1982 को सवेरे करीब ग्यारह बजे 8000/ की उंचाई पर एक डकोटा विमान में मद्रास से कोचिन तक ग्रार० टी० ग्रार० कार्य के दौरान स्क्वाड्रन लीडर विश्वनाथन नागराजन (8753) फ्लाइंग (पाइलट) ने ग्रपने स्टारबोर्ड इंजन में कम्पन ग्रनुभव किया। उन्होंने चोलहांका, बंगलौर की तरफ जाने का फैसला किया। क्योंकि इंजन में कंपन तेज होता गया ग्रौर विमान नीचे ग्राने लगा इसलिए उन्होंने सामान निकालकर विमान का भार हल्का कर दिया। ग्रापात तरीकों के बावजूद प्रोपेलर ठीक नहीं हुग्रा ग्रौर विमान तेजी से नीचे ग्राने लगा। स्थिति की गम्भीरता को समझते हुए ग्रौर यह देखकर कि वे बंगलौर या किसी दूसरे हवाई ग्रड्डे पर नहीं पहुंच पायेंगे, उन्होंने विमान को एक झील में उतारने का फैसला किया जोकि पहुंच के ग्रन्दर-ग्रन्दर एकमात्र साफ स्थान था ग्रौर बादलों वाले मौसम में उस ग्राम तौर पर पहाड़ी दुर्गम भूभागों में एकमात्र ऐसा स्थान था जहां उतरा जा सकता था। उन्होंने पूर्ण नियंत्रित ढंग से जबरन विमान को नीचे उतारा ग्रौर विमान झील में करीब तीन फुट गहरे पानी में उतर गया। स्क्वाड्रन लीडर विश्वनाथ नागराजन ने इस ग्रापात स्थिति में बड़ी सफलता से काम किया ग्रौर न केवल विमान में बैठे लोगों बल्कि जमीन पर भी ग्रनेक जानें बचाई।

स्क्वाड्रन लीडर विश्वनाथन नागराजन ने इस प्रकार ग्रनुकरणीय व्यावसायिक कुशलता, क्षमता ग्रौर कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

सं० 14-प्रेज/83—राष्ट्रपति, निम्नलिखित व्यक्तियों को उनके वीरतापूर्ण कार्यों के लिये "शौर्य चक्र" प्रदान किए जाने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. श्री ब्रज राज,
सुपुत्र श्री धर्मेन्द्र सिंह, निवासी गांव पाली,
पो० थाना सरधना,
जिला मेरठ ।
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 8 अक्तूबर, 1980)

7/8 अक्तूबर, 1980 की रात को कुछ डाकुओं ने पाली गांव के श्री जगराम सिंह के घर धावा बोल दिया लेकिन उनका कड़ा विरोध किया गया। मुठभेड़ में इस गांव के 15 वर्षीय लड़के ब्रज राज ने भारी जोखिम उठाकर डाकुओं के सरदार मातिन धोबी से एक चाल खेली और उसकी बंदूक छीन ली और तत्पश्चात् गांव वाले डाकुओं के सरदार को मार डालने में सफल हो गये। अन्य डाकुओं ने गांव वालों पर गोली चलाई जिससे ब्रजराज ओर कुछ अन्य व्यक्ति घायल हो गए। डाकू अपने सरदार की लाश वहीं छोड़कर भाग खड़े हुए।

श्री ब्रज राज की बहादुरी और जांबाजी के मुख्य कारण से ही डकैती का प्रयास विफल हुआ और डाकुओं का सरदार मार डाला गया ।

2. मेजर भरत सिंह (आई० सी०-23436)
बिहार ।
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 20 जनवरी, 1981)

20 जनवरी, 1981 को सूचना मिली कि एक सशस्त्र विरोधियों का गिरोह एक घने जंगल में घुसपैठ करने के बाद तथा वहां अपना अड्डा स्थापित करने के बाद सैनिकों तथा वाहनों पर घात लगाने की योजना बना रहा था। मेजर भरत सिंह की बटालियन ने विरोधियों का पता लगाकर उन्हें खत्म करने के काम पर जिन तीन टुकड़ियों को तैनात किया था उनमें से एक टुकड़ी की कमान मेजर भरत सिंह को सौंपी गयी। खोज का यह कार्य मूसलाधार वर्षा में किया जाना था।

विरोधियों के ठिकानों का पता अन्य दो टुकड़ियों में से एक टुकड़ी ने लगा लिया और छिपे हुए विरोधियों तथा इस टुकड़ी के बीच गोलीबारी की आवाज सुनकर मेजर भरत सिंह ने तुरन्त अपनी दो निकटतम सैक्शनों को इकट्ठा किया और अपने बाकी आदमियों को सन्देश भेजने के बाद वे उस स्थान की ग्रोर रवाना हो गए जो उनके अनुमान से 800 मीटर पूर्वोत्तर में था विरोधियों ने सैनिकों की इस टुकड़ी को देख लिया और स्वचालित हथियारों से गोलीबारी शुरू कर दी। मेजर भरत सिंह ने तुरन्त अपनी एक सैक्शन को कवरिंग फायर देने को कहा और दूसरी सैक्शन का खुद नेतृत्व करके विरोधियों की मोर्चाबन्दियों पर धावा बोल दिया। आगे हुई मुठभेड़ में छः भूमिगत लोग पकड़ लिये गये। और आगे लड़ने को बेकार समझते हुए विरोधियों ने वहां से भाग निकलने की कोशिश की लेकिन तब तक तीसरी टुकड़ी घटना स्थल तक आ गयी थी और उसने इन विरोधियों को भागने से रोक दिया। इस सारी कार्यवाही के फलस्वरूप 15 भूमिगत विरोधी और भण्डा-फोड़ करने वाले कागजों के अतिरिक्त ढेर सारा गोला बारूद हस्तगत कर लिए गए ।

मेजर भरत सिंह ने इस प्रकार उत्कृष्ट वीरता, धैर्य, कर्तव्यपरायणता और प्रेरणादायक नेतृत्व का परिचय दिया।

3. श्री असित कुमार कुशवाहा,
सुपुत्र श्री वीरेन्द्र सिंह कुशवाहा,
119/494 दर्शन पुरवा,
कानपुर ।
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 16 मार्च, 1981)

16 मार्च 1981 को नरेश शर्मा और पुत्तुलाल नामक दो गुंडे दर्शनपुरवा, कानपुर के निवासी श्री दया शर्मा की दुकान "टार्जन हौजियरी" में घुस गये। नरेश शर्मा ने श्री दयाराम शर्मा पर गोली चलादी लेकिन निशाना चूक गया। गोली चलने की आवाज सुनकर कुछ लोग घटनास्थल पर पहुंच गये और नरेश शर्मा को दबोच लिया लेकिन पुत्तुलाल भाग निकलने में सफल हो गया। पुत्तुलाल को भागते हुए देख कर 16 वर्षीय बालक श्री असित कुमार कुशवाहा ने उसे पकड़ने के लिये उसका सरगरमी से पीछा किया। हालांकि पुत्तुलाल ने उस पर गोली चलाई फिर भी वह बाल-बाल बच गया और अन्त में पुत्तुलाल को पकड़ लिया।

श्री असित कुमार कुशवाहा ने इस प्रकार अपनी जान की परवाह न करते हुए अनुकरणीय साहस और वीरता का परिचय दिया।

4. कैप्टन प्रेमजीत (आई० सी०-34009),
पैराशूट रेजिमेंट।

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि: 13 सितम्बर, 1981)

पैराशूट रेजिमेन्ट ने सितम्बर-अक्तूबर, 1981 में। "पराट्रूपर्स नन्दादेवी अभियान" आयोजित किया था।

कैप्टन प्रेमजीत इस अभियान के सिगनल अफसर होने के अतिरिक्त एक दस्ते के नेता भी थे। वे गश्ती ठिकाने शिविर-1 के लिए प्रस्तावित थल तक गई बर्फ की दीवार और भयंकर बाधा प्रस्तुत करने वाली एक दम खड़ी पहली ही चट्टान पर चढ़ने की तकनीकी दृष्टि से कठिन कार्य को करने के लिये स्वत: आगे आए और एक नेता की हैसियत से अभूतपूर्व निष्ठा, भारी उत्साह और सतत असाधारण साहस का प्रदर्शन किया।

कैप्टन प्रेम जीत इतने अधिक प्रेरित हो चुके थे कि उन्होंने अपने आराम और सुरक्षा की कभी चिन्ता नहीं की और अभियान को सफल बनाने के लिए बढ़-चढ़ कर काम किया। अभियान की आरम्भिक अवधि में आधार शिविरों की स्थापना, नंदा देवी के दक्षिण रिज से लम्बे और खतरनाक इलाके में रास्ता बनाना और साथ ही साथ सिगनल संचार के दायित्व को निभाने में उनका काम पर्वतारोहियों और पैराशूट रेजिमेंट की श्रेष्ठतम परम्पराओं के अनुरूप था। कठिन चढ़ाई के बाद कैप्टन प्रेमजीत और उनके साथी नन्दा देवी ईस्ट शिविर पर पहुंचने में सफल हो गए। लेकिन, वापसी में उतरते समय दुर्भाग्य से वे चट्टानों पर जमी बर्फ की परत पर फिसल कर नीचे गिर गए और उनकी मृत्यु हो गई।

कैप्टन प्रेमजीत ने इस प्रकार अनुकरणीय साहस, मिलजुलकर काम करने की भावना और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

5. हवलदार दया चन्द (1360404 एस० एम०)
पैराशूट रजिमेन्ट।

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि: 13 सितम्बर, 1981)

पैराशूट रेजिमेन्ट ने सितम्बर-अक्तूबर, 1981 में "पैराशूट रूपर्ज नन्दा देवी अभियान" का आयोजन किया था। हवलदार दयाचन्द को नन्दा देवी ईस्ट के तकनीकी दृष्टि से कठिन और खतरनाक दक्षिणी रिज से रास्ता बनाने के काम के दौरान उनके दस्ते का प्रमुख पर्वतारोही बनाया गया था। पूरे समय उन्होंने हर काम निष्ठापूर्वक करने म तत्परता और असाधारण साहस तथा संगठित रूप से काम करने की भावना का प्रदर्शन किया। 21 से 26 सितम्बर, 1981 के बीच जब सब पैट्रोल नं० 3 कैम्प 11 और पट्रोल बेस/कैम्प III के बीच के रास्ते पर आगे बढ़ रहा था तो हवलदार दया चन्द हर समय महत्वपूर्ण उपकरण और खाद्य सामग्री के भारी वजन पहुंचाने के लिए सबसे आगे रहे। 24 सितम्बर 1981 को मौसम खतरनाक रूप से खराब हो गया और आगे बढ़ना भी अत्यधिक खतरनाक हो गया तो भी हवलदार दयाचन्द ने अपनी इच्छा से उपकरण और खाद्य सामग्री जैसी महत्वपूर्ण चीजें केम्प 3 तक पहुंचाना जारी रखा।

हवलदार दयाचन्द ने एक रास्ते पर 5 पर्वतारोहियों को लेकर नया रिकार्ड कायम किया। इन्हें मिलाकर पर्वतारोहियों कीले कुल संख्या ग्यारह हो गई। एक ही अभियान में सफलता से ऊपर पहुंचने वालों की यह सबसे बड़ी संख्या थी।

दुर्भाग्य से वापसी म उतरते समय तम्बू खूटियों को मजबूत करने की कोशिश में वे तम्बू के सामने चट्टान पर बिछी बर्फ की जमी हुई परत पर फिसलकर गिर गए और उनकी मृत्यु हो गयी।

हवलदार दयाचन्द ने इस प्रकार अनुकरणीय साहस, मिल-जुल कर काम करने की भावना और उच्च कोटि की कर्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

6. श्री फुरबा दोरजी, (मरणोपरान्त)
सिविलियन इन्सट्रेक्टर।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि: 13 सितम्बर, 1981)

पैराशूट रेजीमेंट ने सितम्बर/अक्तूबर, 1981 में "पैराटरुपर्ज, नन्दा देवी अभियान" का आयोजन किया था।

दार्जिलिंग के हिमालय पर्वतारोहण संस्थान के शेरपा प्रशिक्षक श्री फुरबा दोरजी को अभियान में शेरपा सरदार और तकनीकी सलाहकार के रूप में नियुक्त किया गया। वे एक बहुत ही अनुभवी प्रशिक्षक थे और उन्होंने भारी कर्मठता उत्साह और उच्च कोटि के साहस का प्रदर्शन किया। उन्होंने स्वत: पूर्वी पैट्रोल के साथ जाने का प्रस्ताव किया क्योंकि इसी पैट्रोल का लक्ष्य नन्दा देवी ईस्ट की अत्यधिक कठिन चोटी पर पहुंचने का प्रयास करना था। उन्होंने कैप्टन प्रेमजीत के साथ जाने के लिए अपने आपको प्रस्तुत किया और दोनों ने दो दिन की अल्पावधि में सब से ज्यादा भयंकर बाधा डालने वाली पन्द्रह सौ फुट ऊंची एकदम खड़ी चट्टान और बर्फ की दीवार पर चढ़ने में सफलता प्राप्त की। भंडार कैम्पों पैट्रोल शिविर के लिये पूरा भार लेकर वे हमेशा पैट्रोल नेता का साथ देते रहे।

4 अक्तूबर, 1981 को मौसम साफ होने पर स्वेच्छा से कठिन और खतरनाक नन्दा देवी ईस्ट की चोटी पर चढ़ाई करने में अपने नेता का साथ देते हुए श्री फुरबा दोरजी ने संगठित रूप से काम करने की भारी भावना अनुकरणीय साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया। दुर्भाग्य से शिखर से लौटते समय वे और उनके नेता जमी हुई बर्फ की परत पर फिसल गए और उनकी मृत्यु हो गई।

श्री फुरबा दोरजी ने इस प्रकार अनुकरणीय साहस, मिलजुल कर काम करने की भावना और उच्च कोटि की कर्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

7. 4240781 लान्स हवलदार श्री धोरो माझी,
(मरणोपरान्त)

बिहार रेजिमेंट ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 9 नवम्बर, 1981)

9/10 नवम्बर, 1981 की रात को लांस हवलदार श्री धोरो माझी उस प्लाटून के प्रमुख सेक्शन कमांडर थे जो अरुणाचल प्रदेश में विरोधियों के इलाके में आगे बढ़ रही बिहार रेजिमेंट की एक बटालियन का अग्रणीत्व कर रही थी । जब प्रमुख सेक्शन फांगसान गांव के पास पहुंचा तो लांस हवलदार श्री धोरो माझी ने दो व्यक्तियों को रास्ते से एकदम उठकर गांव की ओर भागते देखा । अपने प्लाटून कमांडर को इसकी सूचना देकर उन्होंने उन दो व्यक्तियों का पीछा करना आरम्भ कर दिया ।

जब सैक्शन गांव के पास पहुंचा तो विरोधियों ने एक एल० एम० जी० और पांच-छः राइफलों से गोली चलानी शुरू कर दी । लांस हवलदार श्री धोरो माझी, जो पहले भी दो बार घात लगाकर किए गए इस तरह के हमलों का मुकाबला कर चुके थे, शांत-चित्त और धैर्यपूर्ण रहे और बाईं बाजू में गोली लगने के बावजूद उन्होंने अपने सैक्शन को जवाबी गोली चलाने के लिए कारगर ढंग से तैनात किया । अत्यधिक खून बहने के कारण वे तेजी से शिथिल पड़ते गए फिर भी वे अपनी सैक्शन के बहादुर जवानों को विरोधियों पर दबाव बनाए रखने के लिये गोली-बारी जारी रखने को प्रेरित करते रहे । अपने नेता के साहस और उत्साह से प्रेरित होकर इस सैक्शन ने विरोधियों को गांव से हटने पर मजबूर कर दिया । लेकिन इस बीच लांस हवलदार श्री धोरो माझी अचेत हो गए और घावों के कारण उनकी मृत्यु हो गई ।

लांस हवलदार धोरो माझी ने इस प्रकार सशस्त्र विरोधियों का सामना करते हुए असाधारण कर्तव्य परायणता एवं अनुकरणीय साहस का परिचय दिया और ऐसा करने में अपने प्राणों की आहुति दे दी ।

8. सैकण्ड लेफ्टिनेन्ट सुशांत कुमार सथपथी
(एस० एस०-30846)
बिहार ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 11 दिसम्बर, 1981)

सैकण्ड लेफ्टिनेन्ट सुशांप्त कुमार सथपथी को 1981 में थल सेना में कमीशन मिला और वे अक्तूबर, 1981 से राष्ट्र-विरोधी गतिविधियों में प्रवृत्त इलाके में नियुक्त थे । 11 दिसम्बर, 1981 को इन्हें इम्फाल में कीसामपत इलाके में सामान्य गश्त के लिये भेजा गया । गश्त के दौरान ये कांमलिए-पाक उन्मानसाग प्रैस में पहुंचे । हालांकि उग्रवादियों के साथ इस प्रैस के संबंधों के बारे में संदेह की कोई रिपोर्ट नहीं मिली थी फिर भी उन्हें शक हुआ कि शायद उग्रवादी संगठन इस प्रैस का इस्तेमाल उपद्रवी प्रचार सामग्री छापने के लिये कर रहे हों और यह सोचकर उन्होंने इस प्रैस की सरसरी तौर पर जांच करने का फैसला किया । प्रैस में काम कर रहे कर्मचारियों को सैनिकों के आ जाने का बिलकुल कोई अंदेशा नहीं था । इन कर्मचारियों का संदेहास्पद प्रतिक्रियाओं को देखते हुए इस अधिकारी ने तुरन्त प्रैस को घेर लिए जाने का आदेश दिया । तलाशी में गैरकानूनी घोषित पीपल्स लिबरेशन आर्मी की नीति संबंधी बातों वाले अत्यन्त महत्वपूर्ण कागजात और अन्य सामग्री बरामद हुई । इसके अलावा सैकण्ड लेफ्टिनेन्ट सुशांत कुमार सथपथी प्रैस से चार कट्टर उग्रवादियों को भी पकड़ने में सफल रहे ।

अगले दिन वे एक कट्टर उग्रवादी दुर्लब चन्द्र तमोली को पकड़ने में सफल रहे । इस उग्रवादी के बारे में कहा जाता था कि यह पीपुल्स लिबरेशन आर्मी और असम आन्दोलन के बीच सम्पर्क सूत्र का काम कर रहा था । इसके पास गोलियों से भरा हुआ एक देसी पिस्तौल भी बरामद हुआ ।

पकड़े गए इन उग्रवादियों से पूछताछ के बाद आगे कार्य-वाही में इस अधिकारी ने 27 दिसम्बर, 1981 को एक मकान पर छापा मारा और वहां से भारी मात्रा में गोला बारूद बरामद किया । इन्होंने पीपुल्स-लिबरेशन आर्मी के दो कट्टर उग्रवादी सदस्यों को भी पकड़ लिया और उनसे पीपुल्स-लिबरेशन आर्मी के परचे और गोला बारूद बरामद किया ।

31 दिसम्बर, 1981 को इस अधिकारी के नेतृत्व में एक सैनिक टुकड़ी ने इम्फाल के तेरा बाजार इलाके में फिर एक मकान पर छापा मारा । इस मकान में एक उग्रवादी छुपा हुआ था और सैनिकों के छापे से वह घबरा गया और उसने इस अधिकारी तथा उसके जवानों पर एक हथगोला फेंकने की कोशिश की । सैकण्ड लेफ्टिनेन्ट सुशांत कुमार सथपथी अपनी जान की किंचित भी परवाह न करते हुए उस उग्रवादी से भिड़ गए और उसे दबोच लिया ।

सैकण्ड लेफ्टिनेन्ट सुशांत कुमार सथपथी ने इस प्रकार प्रतिकूल परिस्थितियों में भी लगातार वीरता, पहल, सूझबूझ, साहस, और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

9. 24,62350 सिपाही लक्खा सिंह,
पंजाब ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 13 दिसम्बर 1981)

12/13 दिसम्बर 1981 की रात को सिपाही लक्खा सिंह एक डिवीजन कैम्प के कार्यालय क्षेत्र में जब अनआर्मड संतरी की ड्यूटी कर रहे थे तो उन्होंने दो व्यक्तियों को कार्यालय क्षेत्र में संदेहास्पद हालत में घूमते देखा । उन्होंने इन दोनों को ललकारा और इन में से एक घुसपैठिये को बाजू से पकड़ लिया तो उसी क्षण दूसरे घुसपैठिये ने सिपाही लक्खा सिंह पर बारह बोर के देसी पिस्तौल से गोली चला दी । इससे उत्पन्न भ्रांतिपूर्ण स्थिति का फायदा उठाकर दोनों घुसपैठिये अलग-अलग दिशाओं में भागने लगे । सिपाही लक्खा सिंह ने शोर मचाया और अपनी जान की जरा भी परवाह न करते हुए बड़े साहस से काम लेकर इनका पीछा किया और उनमें से एक घुसपैठिये को पकड़ लिया । बाद में पता चला कि यह व्यक्ति दुश्मन का कुख्यात एजेंट था ।

इस कार्य में सिपाही लक्खा सिंह ने साहस और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

10. मेजर राजीव लोचन सिंह (आई० सी०–24347)
राजपूताना राइफल्स
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 17 दिसम्बर 1981)

17 दिसम्बर 1981 को सवेरे छः बजे, मेजर राजीव लोचन सिंह एक दस्ते का नेतृत्व करते हुए उस जगह जा रहे थे जहां से पक्की खबर मिली थी कि एक गैरकानूनी संगठन से संबंधित कुछ सशस्त्र उग्रवादी वहां इकट्ठे हुए हैं। ज्यों ही उनके जवान निर्दिष्ट स्थान पर पहुंचे मेजर राजीव लोचन सिंह ने एक व्यक्ति को मकानों के एक समूह की ओर भागते हुए देखा। बड़ी सराहनीय सूझबूझ और पहल का परिचय देते हुए उन्होंने अपने जवानों को इस राष्ट्रविरोधी को पकड़ लेने का आदेश दिया और खुद भी इस राष्ट्र-विरोधी का पीछा करने लगे। राष्ट्रविरोधी ने उन पर तथा उनके जवानों पर अपनी पिस्तौल से लगातार गोलियां चलाईं ताकि पीछा करने वाले व्यक्ति इस का पीछा करना छोड़ दें। अपनी जान की किंचित परवाह न करते हुए और बढ़-चढ़ कर साहस का प्रदर्शन करते हुए मेजर राजीव लोचन सिंह ने अपने जवानों को आगे बढ़ते रहने को प्रेरित किया और हालांकि उनका एक जवान राष्ट्र-विरोधी की गोली से गम्भीर रूप से जख्मी हो गया था तो भी उन्होंने राष्ट्रविरोधी का पीछा करना नहीं छोड़ा। अंत में मकानों और गांव में करीब एक हजार गज तक लगातार पीछा करने के बाद मेजर राजीव लोचन सिंह राष्ट्रविरोधी के निकट पहुंच गए और राष्ट्र-विरोधी को पकड़ने में, और उसे घायल करने में तथा दबोचने और निरस्त्र करने में सफल हो गए। बाद में पता चला कि यह राष्ट्र विरोधी एक महत्वपूर्ण भूमिगत नेता था।

इस सारी कार्यवाही में मेजर राजीव सिंह लोचन ने साहस, उत्कृष्ट वीरता तथा उच्च कोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

11. लेफ्टिनेन्ट कमांडर मोहम्मद अब्दुल रेहान सुभान
(01115–एच)
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 30 दिसम्बर 1981)

30 दिसम्बर 1981 को चांदमारी के दौरान भारतीय नौ सेना के एक पोत से छोड़ी गई एक मिसाइल फटने के निर्धारित समय से पूर्व ही फट गई जिससे पोत के हैंगर को नुकसान पहुंचने के साथ-साथ बगल वाले हैंगर में भी उसका जलता हुआ ईंधन और आक्सीडाइजर फैल गया। दूसरे मिसाइल की ईंधन टंकी में विस्फोट हो गया जिससे पोत में आग लग गई और उसमें मौजूद सभी कर्मचारियों की जान खतरे में पड़ गई। शीघ्र ही सारे पोत के जल जाने और पास खड़े भारतीय नौसेना पोत "शक्ति" को गम्भीर खतरा हो जाने की संभावना बन गई। पायलट हाउस और आपरेशन रूम बड़ी तेजी से घने और विषैले धुएं से भर गए।

कमांडिंग अफसर लेफ्टिनेंट कमांडर मोहम्मद अब्दुल रेहान सुभान ने इस गम्भीर स्थिति में बड़े धैर्य से काम लिया। उन्होंने पोत के ब्रिज तक पहुंचने की कोशिश की पर सफल न हो सके। तब स्टार बोर्ड वेस्ट पर बाहर आकर इन्होंने देखा कि पोत का पोर्ट साइड बड़ी तेजी से जल रहा था और घने धुएं के कारण कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। यह पोत भारतीय नौसेना पोत शक्ति के समीप आता जा रहा था और अब उससे केवल दो केबल की दूरी पर ही रह गया था। इसमें टनों ईंधन भरा हुआ था जो एकदम आग पकड़ सकता था। लेफ्टिनेंट कमांडर सुभान पायलट हाउस में पहुंचने के लिए स्टार बोर्ड वेस्ट से ब्रिज पर चढ़ गए। वहां से आग में हुई क्षति को देखकर उन्होंने यह उचित समझा कि मिसाइल के क्षत विक्षत अवशेषों को पोत से हटाने के प्रयास में पोत को और अधिक क्षति पहुंचने की संभावना हो सकती थी और इस लिए उन्होंने ऐसा करने के विरुद्ध फैसला किया। ब्रिज चारों ओर से आग की लपटों से घिरा हुआ था। इन्होंने "कशटन" को चलाकर देखा और उसे काम योग्य पाकर पोत के जिस हिस्से में आग लगी थी उसे वायु की प्रति-कूल दिशा में रखकर मुख्य इंजन का प्रयोग करते हुए पोत को भा० नौ० से० पोत "शक्ति" से दूर ले गए।

जब उन्हें इस बात की तसल्ली हो गई कि पोत अब सुरक्षित है और भा० नौ० से० पोत "शक्ति" को भी कोई खतरा नहीं है तो उन्होंने पोत के क्षति नियंत्रण दलों को आग बुझाने के काम में सक्रिय कर दिया और दस मिनट में ही आग पर काबू पा लिया गया। दुर्घटना के तीस मिनट बाद ही आग पूरी तरह से बुझा ली गई। थोड़ी देर बाद बिजली तथा संचार व्यवस्था भी दोबारा चालू कर दी गई और पोत वापिस क्रूजिंग स्टेज पर आ गया यद्यपि यह झुलसा हुआ था परन्तु युद्ध करने में सक्षम था। अपने जीवन की जरा भी परवाह किए बिना जिस धैर्य, अविचलित चित्त, दृढ़ता से लेफ्टिनेंट कमांडर मोहम्मद अब्दुल रेहान सुभान ने खतरनाक स्थिति को सम्भाला वह भारतीय नौसेना की श्रेष्ठतम परम्पराओं के अनुरूप थी।

12. सब लेफ्टिनेंट होमी डाडी मोतीवाला (02015–बी)
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 30 दिसम्बर 1981)

सब लेफ्टिनेंट होमी डाडी मोतीवाला, लेफ्टिनेंट कमांडर मोहम्मद अब्दुल रेहान सुभान की कमान वाले उस भारतीय नौसेना पोत में गनरी अफसर थे जिसमें 30 दिसम्बर, 1981 को चांदमारी के दौरान एक मिसाइल फट जाने से आग लग गई थी। आश्रय स्थल पर रहने के आदेश मिलने पर भी इन्होंने अपनी जान की जरा भी परवाह नहीं की और अपने कमान अफ़सर की अनुमति लेकर आग बुझाने के कार्य का आयोजन किया। इसके बाद इन्होंने कैटवाक ब्रिज पर क्षति नियंत्रण दल का चार्ज संभाला और सारे समय अपने साथियों के साथ इस कामको करने में सबसे आगे रहे। धधकती आग की लपटों से बिना विचलित हुए एवं अपने जीवन को गंभीर खतरे में डाल कर ये तब तक आग बुझाने के कार्य का निजी रूप से निरीक्षण करते रहे जब तक कि आग पर नियन्त्रण नहीं पा लिया गया।

सब लेफ्टिनेंट होमी डाडी मोतीवाला का यह कारनामा भारतीय नौसेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप था।

13. श्री जयप्रकाश, इलेक्ट्रिकल आर्टिफिसर (पावर)
(052484–डब्ल्यू)
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 30 दिसम्बर, 1981)

जयप्रकाश भारतीय नौसेना के उस पोत में इलेक्ट्रिकल आर्टि-फिसर (पावर) थे जिसकी कमान लेफ्टिनेंट कमांडर मोहम्मद अब्दुल रेहान सुभान के हाथ में थी। चांदमारी के दौरान 30 दिसम्बर, 1981 को एक मिसाइल फटने से इस पोत में आग लग गई। स्थिति की अत्यन्त गंभीरता को समझते हुए जयप्रकाश, अपनी इच्छा से, दुर्घटना स्थल की ओर दौड़े और सब लेफ्टिनेंट होमी डाडी मोतीवाला की कमान के अधीन उस क्षति नियन्त्रण दल में जा मिले जो आग पर काबू पाने के कार्य में लगा हुआ था।

जयप्रकाश, इलेक्ट्रिकल आर्टिफिसर (पावर) का यह कारनामा भारतीय नौसेना की श्रेष्ठतम परम्पराओं के अनुरूप था ।

14. लेफ्टिनेंट कमांडर कमलदीप सिंह संधू, एन० एम० (01067-जेड)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 10 जनवरी 1982)

लेफ्टिनेंट कमांडर कमलदीप सिंह संधू भारत के अंटार्कटिका अभियान 1982 के नौसैनिक हेलीकाप्टर पायलटों में से एक थे । 10 जनवरी 1982 को इन्हें सूचना मिली कि बर्फ की फलक के ऊपर खड़े किए गए एक हेलीकोप्टर और बर्फ की चलती-फिरती गाड़ी संकट में थे क्योंकि बर्फ की फलक में दरारें पड़ रही थीं । अपनी जान की किंचित परवाह किए बिना लेफ्टिनेंट कमांडर संधू उस स्थल की ओर रवाना हुए और वहां खड़े हेलीकोप्टर को कुछ ही क्षणों में उड़ा कर ले गए । इसके बाद ये वैज्ञानिकों के दल को बर्फ की फलक के छिन्न-भिन्न होने से उनके जीवन के लिए उत्पन्न होने वाले अकस्मात खतरे से उन्हें सावधान करने के लिए बेस कैम्प की ओर गए । समय पर मिली इस चेतावनी से भारतीय अभियान दल के वैज्ञानिकों की जानें बच गईं । बेस कैम्प से लौटने के बाद कारगो की खूंटी से एक कामचलाऊ रस्से को हुक कर के बड़ी दिलेरी के साथ चलती-फिरती बर्फ की गाड़ी को भी बर्फ से बाहर निकाल लिया जिसके बिना अभियान दल को बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ सकता था ।

इसी अभियान के दौरान 15 जनवरी, 1982 को एक बार फिर जब हमारा वैज्ञानिक दल आंकड़ा संकलन केन्द्र स्थापित करने के लिये दक्षिण गंगोत्री कैम्प में उतरा तो मौसम बड़ी तेजी से खराब होने लगा । अत्यन्त खतरनाक परिस्थितियों में अपनी जान को गंभीरतम खतरे में डालकर और किसी सह पायलट की मदद लिए बिना ही लैफ्टिनेंट कमांडर संधू ने 95 कि० मी० से अधिक दूरी तय कर उक्त स्थल से वैज्ञानिकों को वापस पोत में लाने का बीड़ा उठाया।

अंटार्कटिका के अभियान के की सारी अवधि में लैफ्टिनेंट कमॉडर कमलदीप सिंह संधू ने उत्कृष्ट धीरता, साहस और अति उच्च कोटी की कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया ।

15. 9080689 लांस नायक बलराज, जाक लाइट इन्फैन्ट्री

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 17 जनवरी, 1982)

17 जनवरी, 1982 को शाम के करीब साढ़े पांच बजे पांच डाकुओं के एक गिरोह ने मेरठ जिले में चंदेन गांव के पास एक तांगे और कुछ अन्य राहगीरों को लूट लिया । जब कुछ गांववासी और पुलिस घटना स्थल पर पहुंची तो डाकू पास में एक गन्ने के खेत में छिप गये । जब उन्हें घेर लिया गया तो डाकुओं ने गोली चला दी और गोलियां चलाते हुये उन्होंने जंगल की तरफ भाग निकलने की कोशिश की ।

गांववालों की मदद के लिये आवाज सुनकर लांस नायक बलराज स्वेच्छा से दो अन्य व्यक्तियों के साथ घटना स्थल की ओर दौड़े । एक डाकू को बच कर भाग निकलने की कोशिश में देखकर निहत्थे लांस नायक बलराज ने उसका पीछा करके उसे दबोच लिया और जिसके फलस्वरूप दोनों में काफी लम्बा संघर्ष हुआ जिसके दौरान लांस नायक बलराज डाकू के साथ भिड़ गए और अन्त में उससे उसकी भरी बन्दूक छीनने में सफल हो गए । इस बीच पुलिस ने एक डाकू को गोली से मार गिराया था और दूसरे को पकड़ लिया था ।

इस कार्य में लांस नायक बलराज ने उच्च निःस्वार्थ नागरिक सेवा भावना और निर्भीक साहस का परिचय दिया जो थल सेना की श्रेष्ठतम परम्पराओं के अनुरूप था।

16. जे०सी० 108920 नायब सूबेदार दरवान सिंह, गढ़वाल राइफल्स ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 20 जनवरी, 1982)

नायब सूबेदार दरवान सिंह एक सामरिक चौकी के कमांडर के रूप में नियुक्त थे और वे अपने जिम्मे इलाके में विरोधियों की चालों, उपस्थितियों और गतिविधियों पर लगातार और गहरी नजर रखे हुये थे । उन्होंने अपने लिये अति विश्वस्थ सूत्र भी बना लिये थे । 20 जनवरी, 1982 को शाम के करीब साढ़े सात बजे नायब सूबेदार दरवान सिंह को अपने सूत्रों से पता चला कि मिजो नेशनल फ्रंट के एक या दो विरोधी गांव के एक मकान में आये हुये थे । उन्हें यह भी सूचना मिली कि एक विरोधी हथियारों से लैस था और उसके पास गैर कानूनी ढंग से इकट्ठी की गई काफी सारी धन राशि भी थी । स्थिति की गम्भीरता और समय पर कार्यवाही की जरूरत महसूस करते हुये उन्होंने तुरन्त अपने पन्द्रह जवानों को इकट्ठा किया और गांव की तरफ चल पड़े । मकान के पास पहुंचने पर उन्होंने इसे घेर लिए जाने का आदेश दिया और बिना किसी हिचकिचाहट के और अपनी जान की परवाह किये बिना वे उस मकान में घुस गये जहां उपद्रवी छिपा हुआ था। ज्यों ही नायब सूबेदार दरवान सिंह ने मकान में प्रवेश किया तभी विरोधी ने उन्हें पिस्तौल दिखाकर धमकाया । फिर भी नायब सूबेदार दरवार सिंह ने बड़े साहस के साथ अकेले ही उसे दबोच लिया । हालांकि वे घायल हो गये थे और उन्हें गम्भीर खरोंचें लगी थी लेकिन उन्होंने विरोधी को दबाये रखा और फिर उनके जवानों ने वहां पहुंचकर उस विरोधी को पकड़ लिया ।

इस कार्यवाही में नायब सूबेदार दरवान सिंह ने साहस, पहल और असाधारण कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

17. मेजर रणवीर सिंह शेखावत (आई०सी० 19197) सिख । (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 19 फरवरी 1982)

19 फरवरी 1982 को मेजर रणवीर सिंह शेखावत को इम्फाल से उखरूल तक जवान और राशन ले जाने वाली तीन गाड़ियों की कानवाई ले जाने का काम सौंपा गया । सवेरे करीब दस बजे जब कानवाई एक मोड़ मुड़ रही थी तो विरोधियों ने उस पर सुनियोजित घात लगाकर हमला कर दिया । उनकी गोलीबारी की तीव्रता इतनी भंयकर थी कि मेजर शेखावत जिस अगली गाड़ी में सफर कर रहे थे वह ठप्प पड़ गई । मेजर रणवीर सिंह शेखावत अपनी जान की बल्किुल भी परवाह न करते हुये गाड़ी से कूद गए

और अपने जवानों को जुटाते हुए विरोधियों पर जवाब में गोली चलाई। अपने अधिकतर जवानों को मृत या गम्भीर रूप से घायल पाकर वे अकेले ही विरोधियों का मुकाबला करते रहे। हालांकि सीने में गोली लग जाने से वे गम्भीर रूप से घायल हो गये थे। तो भी उन्होंने आखिरी दम तक अपना हथियार नहीं छोड़ा और विरोधियों को इसे ले जाने नहीं दिया।

मेजर रणवीर सिंह शेखावत ने इस प्रकार वीरता अनुकरणीय साहस कर्त्तव्यपरायणता और प्रेरणादायक नेतृत्व का परिचय दिया।

18. 3367667 सिपाही मोहिन्दर सिंह,
सिख।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 19 फरवरी, 1982)

19 फरवरी, 1982 को सिपाही मोहिन्दर सिंह तीन गाड़ियों वाली कानवाई की दूसरी गाड़ी में लगी लाइट मशीन गन को संभाले हुये थे। रास्ते में इस कानवाई पर विरोधियों ने घात लगाकर हमला कर दिया। चारों तरफ से हो रही सख्त गोलीबारी की परवाह न करते हुये सिपाही मोहिन्दर सिंह ने तुरन्त लाइट मशीन गन से जवाब में गोलियां बरसानी शुरू कर दी। लेकिन विरोधियों की कुछ गोलियां, उनकी लाईट मशीनगन पर आ लगी जिससे उसे इतनी क्षति पहुंची कि यह बेकार हो गई। लेकिन वे घबराए नहीं और तुरन्त गाड़ी से बाहर कूद गए और अपने एक मृत साथी की राइफल उठाकर विरोधियों पर जवाब में गोली चलाने लगे। जब गोलियां खत्म हो गई तो वे रेंगते हुए एक और मृत साथी तक पहुंचे और उसकी दो मैगजीनें उठाकर फिर गोली चलानी शुरू कर दी जिससे कुछ विरोधी या तो मारे गए या घायल हो गए। अपने अदम्य साहस और दृढ़ता के कारण उन्होंने विरोधियों को कारगर ढंग से दबाए रखा और उन्हें अंतिम दो गाड़ियां लूटने से रोके रखा। अपनी बहादुरी के कारनामों के कारण सिपाही मोहिन्दर सिंह ने अपने साथियों की जान बचाने के अलावा यह भी सुनिश्चित किया कि इन गाड़ियों से कोई हथियार या गोला बारूद विरोधी न ले जा सकें।

इस कार्य में सिपाही मोहिन्दर सिंह ने उत्कृष्ट वीरता, अनुकरणीय साहस दृढ़ता और अति उच्च कोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

19. मेजर ओम प्रकाश देसवाल (आई सी 23711),
बिहार।

(पुरस्कार, की प्रभावी तिथि : 13 अप्रैल, 1982)

13 अप्रैल, 1982 को मेजर ओम प्रकाश देसवाल ने कदम पोकपी गांव से सशस्त्र राष्ट्रविरोधियों के एक दल को खदेड़ने के लिये एक सामूहिक कार्यवाई में 52 जवानों की टुकड़ी का नेतृत्व किया। गांव पहुंचकर उन्होंने वहां उत्तरी और पूर्वी हिस्से की प्रभावकारी ढंग से नाकेबन्दी कर ली।

अपने कमांडिंग अफसर के आदेश पर वे एक और टुकड़ी को मजबूत बनाने के लिये दौड़े। इस टुकड़ी पर उग्रवादियों का सख्त दबाव होता जा रहा था। मेजर ओम प्रकाश देसवाल ने तुरन्त कमान संभाली। उग्रवादियों के एक ग्रुप को दक्षिण की तरफ भाग निकलते देखकर उन्होंने इस ग्रुप के खिलाफ कार्रवाई शुरू कर दी लेकिन उग्रवादियों का एक और ग्रुप तुरन्त ही उसी दिशा में आ गया। तब मेजर ओम प्रकाश देसवाल ने अपनी दूसरी टुकड़ी को इन उग्रवादियों के बच निकलने के रास्ते को काट देने का आदेश दिया। लेकिन इस कार्यवाही में टुकड़ी के नेता कैप्टन अजीत सिंह के सिर में गोली लग गई और और वे गिर पड़े।

मेजर ओम प्रकाश देसवाल ने चार उग्रवादियों को बांध की आड़ में भाग निकलने की कोशिश करते हुये देखा और उनसे हथियार डाल देने को कहा। लेकिन उग्रवादियों ने उन पर गोली चला दी। क्योंकि उग्रवादी उनकी कारबाइन की मार से बाहर थे, इसलिये वे रेंगते हुये उस स्थान तक गए जहां से उग्रवादियों को वे अपनी रेंज में ले सकें। उन्होंने एक उग्रवादी को गोली मार कर घायल कर दिया और इससे एक आटोमेटिक राइफल बरामद की। बाद में पता चला कि यह उग्रवादी कट्टर उग्रवादी था और जेल से भागा हुआ था।

मेजर ओम प्रकाश देसवाल पर एक तरफ से दोमंजिले मकान से और सामने से गोलियों की भारी बौछार हो रही थी। लेकिन अपनी जान की परवाह न करते हुये मेजर ओम प्रकाश देसवाल बिना किसी मोर्चे बन्दी की जगह से ही उग्रवादियों का मुकाबला करते रहे और एक और उग्रवादी को गोली मार कर घायल कर दिया जिसे बाद में कट्टर उग्रवादी रोमी सिंह बताया गया।

इसके बाद मेजर ओम प्रकाश देसवाल रेंगते हुये उस जगह पहुंचे जहां कैप्टन अजीत सिंह बेहोश पड़े थे और उन्हें उठाकर साथ के एक बांध पर सुरक्षित ले गए जहां से उन्हें हटाकर रेजीमेंट सहायता चौकी पर ले जाया गया। समय पर हुई इस कार्यवाही से कैप्टन अजीत सिंह की जान बच गई।

मेजर ओम प्रकाश देसवाल ने इस प्रकार उत्कृष्ट वीरता, असाधारण साहस और उच्च कोटि का कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

20. 4244707 हवलदार फिलमन कुजुर,
बिहार।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 13 अप्रैल, 1982)

13 अप्रैल, 1982 को सूचना मिली कि इम्फाल के कदम पोकली खुनाऊं गांव में मायाथी लोइकाई में कुछ सशस्त्र उग्रवादी छिपे हुये थे। बिहार रेजीमेंट की एक बटालियन तुरन्त वहां पहुंची और उसने गांव को घेर कर तलाशी शुरू कर दी। इस तलासी दल में हवलदार फिलमन कुजूर भी शामिल थे और इसका नेतृत्व मेजर ओम प्रकाश देसवाल कर रहे थे। सबेरे करीब सवा आठ बजे गांव के दक्षिणी भाग में उग्रवादियों ने कैप्टन अजीत सिंह के नेतृत्व वाली दूसरी तलाशी टुकड़ी पर अचानक पक्के निशानेबाजी की भारी गोलीबारी शुरू कर दी। मेजर देसवाल और उनकी टुकड़ी

गोलीबारी वाले स्थान की ओर दौड़े और वहां पहुंचकर देखा कि कैप्टन अजीत सिंह को सिर में गोली लगी थी और वे बेहोश पड़े थे।

उस समय चार उग्रवादी एक बांध के साथ बच निकलने के के लिए भाग रहे थे उन पर गोली चलने से तीन उग्रवादी घायल हो गये लेकिन चौथे उग्रवादी ने बच निकलने की कोशिश की। अपनी जान की जरा भी परवाह न करते हुए हवलदार फिलमन कुजूर ने तुरन्त उस भागते हुए उग्रवादी का पीछा किया और एक देसी पिस्तोल सहित उसे पकड़ लिया।

हवलदार फिलमन कुजूर तब कैप्टन अजीत सिंह को वहां से हटाने में मेजर देसवाल की मदद के लिए स्वतः आगे आये। उग्रवादियों की पक्के निशानेबाजी की भारी गोलीबारी के बावजूद वे रेंगते हुए उस स्थान तक पहुंचे जहां कैप्टन अजीत सिंह जख्मी हुए पड़े थे। उन्होंने अपनी सुरक्षा की परवाह न करते हुए उस जख्मी अफसर को उठाया और बांध के पीछे सुरक्षित स्थान पर ले गए जहां से उन्हें रेजीमेंट की सहायता चौकी तक ले जाया गया।

एक उग्रवादी को पकड़ने और बाद में एक घायल अफसर की जान बचाने में हवलदार फिलमन कुजूर ने वीरता साहस और उच्च कोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

21. 265964 हवलदार छोटू सिंह
ग्रेनेडियर्स

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 15 मई 1982)

15 मई 1982 को दिन में साढ़े तीन बजे कुख्यात डाकुओं के एक गिरोह ने राजस्थान के जैसलमेर जिले में बीदा गांव पर हमला कर दिया। गांव पर उनका यह नौवां हमला था।

हवलदार छोटू सिंह इस गांव में वार्षिक छुट्टी पर आये हुये थे। डाकुओं की गोली की आवाज सुनकर उन्होंने तुरन्त मौके की जगह पर मोर्चा बनाया और लूटपाट कर रहे डाकुओं पर कारगर ढंग से गोली चलानी शुरू कर दी। इस अप्रत्याशित गोलीबारी से डाकुओं में पूरी तरह से हड़बड़ी फैल गई और वे लूट के गहने तथा मवेशी वहीं छोड़कर इधर उधर भाग खड़े हुये। हवलदार छोटू सिंह ने 13 गोलियां चलाई और एक कुख्यात डकैत सरदार, सज्जन खां को मार गिराने में सफलता प्राप्त की। डाकुओं ने अपने सरदार की लाश को ले जाने की बड़ी कोशिशें की लेकिन हवलदार छोटू सिंह ने अपनी पक्की निशानेबाजी और भारी गोलियों की बौछार से डाकुओं की सभी कोशिशें नाकाम कर दीं।

डाकुओं के गिरोह का अकेले ही सामना करके वीरता और पहल के इस कारनामे द्वारा हवलदार छोटू सिंह ने बीदा गांव में डकैती के प्रयास को विफल कर दिया। उनके अभूतपूर्व साहस के कार्य की स्थानीय प्रशासन और उनके गांव के लोगों ने बड़ी सराहना की।

22. स्क्वाड्रन लीडर श्रवणकुमार भाटिया (11316) फ्लाइंग (पायलट)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 20 मई 1982)

अप्रैल 1982 में स्क्वाड्रन लीडर श्रवणकुमार भाटिया को एक ऐसा काम सौंपा गया जिसमें एक जगह पहले भारी मशीनें लगाने और उनसे काम पूरा हो जाने के बाद फिर उन्हें हटाने की जिम्मेवारी थी। ये स्थान बहुत ही छोटे-छोटे अनेक भूस्थल थे और सब के सब हिमालय की सीमा के साथ 6000' की ऊंचाई पर स्थिर थे। यहां इतने भारी सामान के साथ एक एम आई 8 हैलीकोप्टर को उतार लेना लगभग असंभव सा लगता था।

स्क्वाड्रन लीडर श्रवणकुमार भाटिया (11316) फ्लाइंग (पायलट) ने इस कार्य को अधिकतम साहस के साथ किया। नब्बे दिन तक हिमालय की हरी और खतरनाक संकरी घाटियों में भारी कठिनाइयों और परेशानियों के कार्यक्षेत्र में सब पहलुओं से उड़ान के लिये अत्यन्त प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद उस अवधि में लगातार एक सौ अट्ठाईस बार वहां उतरकर स्क्वाड्रन लीडर श्रवणकुमार भाटिया ने उन्हें सौंपे गये कार्य को पूरा कर दिखाया और अपने को आपने भारतीय वायुसेना का "पूर्ण पायलट" सिद्ध कर दिखाया। इतने लम्बे समय में कभी भी एक मामूली सी क्षणिक चूक गम्भीर नुकसान और उनके लिये पूरी तरह विपत्ति का कारण बन सती थीं।

स्क्वाड्रन लीडर श्रवणकुमार भाटिया ने इस प्रकार अदम्य साहस उच्च कोटि की व्यावसायिक कुशलता, क्षमता और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

23. फ्लाइट लेफ्टिनेंट बिक्रम देव सिंह (13573) फ्लाइंग (पायलट)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 25 जून 1982)

24 जून 1982 को सूचना मिली कि धर्मशाला के उत्तर में उन्द्रजीत दर्रे के पास थलसेना के 19 कार्मिक फंस गए थे। उनके बचाव के लिये एक विमान भेजा गया जिससे यह पता चला कि यह कार्मिक 14 500 फुट ए०एम०एस० एल० की ऊंचाई पर और 75 ढलान वाले पर्वतीय हिस्से पर एक चट्टान पर थे। ये कार्मिक 10 फुट ताजा गिरी बरफ से घिरे हुये थे। यह पाया गया कि वहां उतर पाना मुश्किल था और इन कार्मिकों को बचाने के लिये भारोत्तोलक का सहारा लेना पड़ेगा। उस स्थान पर भोजन दवाइयां और कम्बल गिराये गये और विमान शाम को बेस पर लौट आया।

25 जून 1982 को फ्लाइट लेफ्टिनेंट बिक्रम देव सिंह, फ्लाइंग (पायलट) को बचाव भारोत्तोलक से युक्त चीता विमान में बचाव कार्य शुरू करने को कहा गया। वे सवेरे नौ बजे उस स्थल पर पहुंच गये। उस समय मौसम साफ था लेकिन हवायें करीब 40 नाट की रफ्तार से चल रहीं थी। पूरी तरह रैकी करने के बाद विमान को फंसे हुये कार्मिकों

के 15 फुट ऊपर तक ले आया गया और वहां विमान चक्कर काटने लगा। एकदम सपाट ढलान और इन कार्मिकों वाले कठिन स्थल के कारण विमान को ऊपर मंडराये रखना पड़ता था और रोटर तथा खड़ी चट्टान के बीच बहुत कम अन्तर रह गया था। इतनी ऊंचाई पर तेज हवाओं और दुर्गम भूभागों की जोखिम भरी परिस्थितियों में विमान को मंडराते रखना बड़ा भयंकर कार्य था और इसके लिये असाधारण दक्षता की जरूरत थी। सहायक को उस स्थल पर नीचे उतारा गया और दो कार्मिकों को ऊपर लेकर उन्हें योल पहुंचाया गया। स्थल पर वापस पहुंचने तक मौसम बहुत खराब हो गया था। इलाके के ऊपर बादल घिर आये थे, रोशनी बहुत कम हो गयी थी और केवल 100 मीटर तक ही दिखाई दे रहा था और हवाए 50 से 55 नाट तक की गति से चलने लगीं थी। इसके बावजूद फ्लाइंग लेफ्टिनेंट विक्रम देव सिंह ने धैर्यपूर्ण व्यावसायिकता का प्रदर्शन करते हुये बचाव कार्य जारी रखा। दो और चक्कर लगाकर कुल छः कार्मिकों को वहां से निकाल लाये। शाम साढ़े पांच बजे तक वहां फंसे हुए सभी कार्मिकों को निकालकर योल पहुंचाया जा चुका था।

फ्लाइट लेफ्टिनेंट बिक्रम सिंह ने इस प्रकार साहस, उच्चकोटि की व्यावसायिक कुशलता और असाधारण कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

24. मेजर कमल कुमार शर्मा (आई० सी०-34205) गोरखा राइफल्स

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 7 जुलाई, 1982)

मेजर कमल कुमार शर्मा राष्ट्रविरोधी गतिविधियों से ग्रस्त एक इलाके में एक महत्वपूर्ण चोकी के कम्पनी कमांडर थे। सूझबूझ से और योजनाबद्ध तरीके से उन्होंने वहां के नागरिकों के बीच अपने भेदिये और सूत्रों का प्रभावी जाल बिछा दिया उन्हें सूचना मिली कि कुछ कट्टर उग्रवादियों ने स्थानीय लोगों से भारी कर वसूल किया था और एक नागरिक ने 8 जुलाई, 1982 को उन्हें पैसा देना था। यह जानकारी मिलने पर उन्होंने उग्रवादियों को पकड़ने की तुरन्त योजना बनाई। उन्होंने अपनी गश्ती टुकड़ी के जवानों को साधारण कपड़े पहनने को कहा और साधारण नागरिकों वाले थैलों में केवल कारबाइन छिपाकर अपनी टुकड़ी के साथ एक घने जंगल में 40 किलोमीटर से अधिक का फासला तय करके आगे बढ़े। निर्धारित स्थान पर पहुंच कर उन्हें पता लगा कि उग्रवादी दूसरी जगह चले गये थे। वे विचलित नहीं हुये और उन्होंने अपने जवानों को अनजाने जंगल में आगे बढ़ने को प्रेरित किया। उग्रवादियों के ठिकाने का पता लगा लेने और उन्हें देख लेने के बाद उन्होंने अपने गश्तीदल को इस तरह तैनात किया कि निर्धारित क्षेत्र पूरी तरह असरदार तरीके से घिर गया। तब मेजर कमल कुमार शर्मा अपने जवानों को लेकर उस झोंपड़ी में घुस गये जहां उग्रवादी मौजूद थे। उन्हें देख उग्रवादी बुरी तरह चौंक गये। यद्यपि उग्रवादी भौंचके हो गये फिर भी प्रतिक्रिया स्वरूप उनमें से एक ने मेजर कमल कुमार शर्मा पर अपनी पिस्तोल तान दी। लेकिन मेजर कमल कुमार शर्मा इस उग्रवादी से भिड़ गये और बाद में हुई हाथापाई में उसे शीघ्र ही दबोच कर निरस्त्र कर दिया। इस कार्यवाही में दो उग्रवादी पकड़े गये। बाद में पता चला कि ये दोनों कट्टर भूमिगत विरोधी थे।

मेजर कमल कुमार शर्मा ने इस प्रकार वीरता, धैर्य, कर्त्तव्यपरायणता और प्रेरणादायक नेतृत्व का परिचय दिया।

25. श्रीमती राजकुमार बिमोलता देवी,
पत्नी श्री एल० ललित सिंह, आयु 35 वर्ष
कीसिमथोंग, लाइश्राम लीरक, इम्फाल, (मणिपुर)
मणिपुर-795001।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 6 अगस्त, 1982)

6 अगस्त, 1982 की सुबह कीसमथोंग, लाइश्राम लीरक, इम्फाल निवासी श्री एल० ललित सिंह के मकान पर दो व्यक्ति आये। श्री ललित सिंह इन्हें अपनी बैठक में ले गये। अन्दर जाकर एक व्यक्ति तो बैठ गया लेकिन, दूसरा बाहर बरामदे में आ गया। श्री एल० ललित सिंह की पत्नी श्रीमती राजकुमार बिमोलता देवी को इन व्यक्तियों की नीयत पर संदेह हुआ और वे एक परदे की ओट में होकर इनको ताड़ने लगीं।

बातचीत के दौरान इन व्यक्तियों ने भारी धनराशि की मांग की। श्री ललित सिंह ने इस पर जब आपत्ति की तो उस व्यक्ति ने अपनी जेब से .38 रिवाल्वर निकाल कर श्री ललित सिंह को बहुत नजदीक से गोली मारने के लिये अपना हाथ ऊपर किया। श्रीमती बिमोलता देवी तुरन्त बाहर निकल आई और उस व्यक्ति पर झपट पड़ी और सहायता के लिये शोर मचा दिया। वह व्यक्ति बुरी तरह घबरा गया और कीसमथोंग की तरफ भाग निकला। उसे आत्म-समर्पण करने को कहा गया और ऐसा न करने पर पुलिस और उसके बीच मुठभेड़ हो गयी जिसमें वह मारा गया। बाद में, पता चला कि उसका नाम न्गांगोम हिट्लर सिंह उर्फ राजन सिंह था। वह एक गैर कानूनी संगठन का कट्टर उग्रवादी नेता था और उसके पिता का नाम न्गांगोम इबोचोऊ सिंह था जो ब्रह्मपुर तिन्सुबम लीरक के निवासी थे। इस उग्रवादी से एक .38 रिवाल्वर, एक खाली केस और छह गोलियां मिली। दूसरा व्यक्ति बच निकला।

श्रीमती राजकुमार बिमोलता देवी ने इस प्रकार अभूत-पूर्व सूझबूझ और उच्चकोटि के शौर्य का परिचय दिया।

सं० 15-प्रेज/83—राष्ट्रपति, निम्नांकित व्यक्तियों को उनकी अति-असाधारण विशिष्ट सेवा के उपलक्ष में "परम विशिष्ट सेवा मैडल" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं:—

1. लेफ्टिनेंट जनरल अरुण कुमार श्रीधर वैद्य (आई० सी० 1701), एम० वी० सी०, ए० वी० एस० एम०, आर्मर्ड कोर।

2. लेफ्टिनेन्ट जनरल यशवंत दत्तात्रय सहस्रबुद्ध (आई० सी० 1603), ए० एस० सी०।

3. लेफ्टिनेन्ट जनरल मन मोहन लाल धई (आई०सी० 3954), इंजीनियर्स।
4. लेफ्टिनेन्ट जनरल कंवल किशन हजारी (आई० सी० 4468), ए० वी० एस० एम०, आर्टिलरी।
5. लेफ्टिनेन्ट जनरल मनोहर सिंह सोढी, (आई० सी० 1592), सिगनल ।
6. वाइस एडमिरल सरदारी लाल सेठी, ए० वी० एस० एम०, एन० एम० (00052-टी) ।
7. वाइस एडमिरल अनिल कुमार भाटिया, ए० वी० एस० एम०, वी० एस० एम० (50005-वाई) ।
8. सर्जन वाइस एडमिरल गोपाल कुप्पूस्वामी, वी० एस० एम० (75006-टी), (सेवा निवृत्ति) ।
9. एयर मार्शल कंवर इकबाल सिंह छाबड़ा, ए० वी० एस० एम० (3831), उड़ान (नेविगेटर)
10. एयर मार्शल मिनू जहांगीर दोतीवाला (3839), उड़ान (पाइलट)।
11. एयर मार्शल सतीश चन्द्र लाल (3793) वै० ई० (इलैक्ट्रानिक्स)।
12. एयर मार्शल कपिल देव चड्ढा वी० एम० (3845), उड़ान (पाइलट)
13. मेजर जनरल नरिन्दर सिंह (आई० सी० 3935), आर्मर्ड कोर।
14. मेजर जनरल सुदर्शन लाल मल्होत्रा (आई० सी० 4789), ए० वी० एस० एम०, इन्फैन्ट्री।
15. मेजर जनरल नरेश कुमार (आई० सी० 5844), आर्टिलरी।
16. मेजर जनरल विजय कुमार नैयर (आई० सी० 5858), एस० एम०, इन्फैन्ट्री।
17. मेजर जनरल असोक बनर्जी (एम० आर० 381) वीर चक्र ए० एम० सी० ।
18. मेजर जनरल स्टेन्ले विलियम बैरट (आई० सी० 1589), ए० वी० एस० एम० इंजीनियर्स (सेवानिवृत्त)।
19. मेजर जनरल बृज नाथ धर (आई० सी० 2381), ए० ओ० सी० (सेवानिवृत्त) ।
20. मेजर जनरल (कुमारी) वट्टारंगथ गौरी, (एन० आर० 680965), एम० एन० एस० (सेवानिवृत्त)।
21. एयर वाइस मार्शल श्री कृष्ण चन्द्र गुप्ता, वी० एस० एम० (3568), प्रशासन ।

सं० 16/प्रेज/83—राष्ट्रपति, निम्नांकित व्यक्तियों को उनकी असाधारण विशिष्ट सेवा के उपलक्ष्य में "अतिविशिष्ट सेवा मैडल)" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते है :—

1. वाइस एडमिरल जयंत गणपत नाडकर्णी, एन० एम०, वी० एस० एम० (00086-डब्ल्यू)
2. मेजर जनरल देवन्द्र नाथ छिब्बड़ (आई० सी० 2321) आर्मी एजुकेशन कोर।
3. मेजर जनरल लालगुडी महालिंगम राजगोपाल (आई० सी० 7191) ई० एम० ई० ।
4. मेजर जनरल जगमोहन राय (आई० सी० 5831), इंजीनियर्स।
5. मेजर जनरल पुरुषोत्तम लाल खेड़ (आई० सी० 6405), वीर चक्र, सेना मैडल, मैकेनाइज्ड इन्फैन्ट्री।
6. रियर एडमिरल राधेश्याम शर्मा, वी० एस० एम० (60027 जेड)।
7. ब्रिगेडियर आनन्द कुमार पाण्डया (आई० सी० 4579) ए० एस० सी०
8. ब्रिगेडियर गुरदयाल सिंह (आई० सी० 5193), ई० एम० ई० ।
9. ब्रिगेडियर अर्जुन शर्मा (आई० सी० 7600) वी० एस० एम०, सिगनल्स ।
10. ब्रिगेडियर विश्वेश्वर सिंह विष्ट (आई० सी० 5377), आर्टिलरी।
11. ब्रिगेडियर लक्ष्मी नारायण सभरवाल (आई० सी० 5846), इन्फैंट्री।
12. ब्रिगेडियर वीरेन्द्र प्रताप (आई० सी० 5853), ए० ओ० सी०।
13. ब्रिगेडियर रमेश चन्द्र (आई० सी० 5824), ई० एम० ई० ।
14. ब्रिगेडियर सुरिन्दर नाथ (आई० सी० 6606) वी० एस० एम०, इन्फैन्ट्री ।
15. ब्रिगेडियर अवतार सिंह सेखों (आई० सी० 4929), मिलिट्री फार्मस कोर ।
16. ब्रिगेडियर नरेन्द्र कुमार (आई० सी० 5976), ए० एस० सी०।
17. ब्रिगेडियर दीन बन्धु मुकर्जी (आई० सी० 5059), इंजीनियर्स।
18. ब्रिगेडियर सतजीत सिंह (आई० सी० 6667), वी० एस० एम०, आर्टिलरी ।
19. ब्रिगेडियर कुमार देवक्रम मजूमदार (आई० सी० 6721), इंफैन्ट्री।
20. ब्रिगेडियर दलीप सिंह सिधु (आई० सी० 7025), वी० एस० एम०, इन्फैन्ट्री।
21. ब्रिगेडियर ईश्वर दत्त वशिष्ठ (आई० सी० 7043), इन्फैन्ट्री।
22. ब्रिगेडियर बसन्त कुमार महापात्र (आई० सी० 7053), आर्मर्ड कोर ।
23. ब्रिगेडियर रविन्दर शर्मा (आई० सी० 7603), आर्मर्ड कोर।
24. ब्रिगेडियर हरबंस सिंह (आई० सी० 7697), आर्मर्ड कोर।
25. ब्रिगेडियर मन्दीप कुमार चौधरी (आई० सी० 8163), इन्फैन्ट्री।
26. ब्रिगेडियर योगिन्द्र कुमार वढेहरा (आई० सी० 8214), इन्फैन्ट्री।
27. ब्रिगेडियर अशोक कृष्ण (आई० सी० 10069), इन्फैन्ट्री ।
28. ब्रिगेडियर वसन्ता राव राघवन (आई० सी० 10150), इन्फैन्ट्री।
29. ब्रिगेडियर ईश्वर चन्द्र नारंग (एम० आर० 1063) ए० एम० सी० (सेवा निवृत्ति) ।
30. कमोडोर सुरेन्द्र मोहन मिश्रा (40045 के) ।
31. कमोडोर बसन्त लक्ष्मण कोपीकर (00180 एन)।
32. सर्जन कमोडोर जोगिन्दर सिंह लाम्बा (75025 के)।
33 कमोडोर विश्व नाथ रविन्द्रनाथ एन० एम०, वी एस० एम० (00194 आर) (सेवानिवृत्त)।
34. एयर कमोडोर बंगलौर वेंकटरमैया जया राव (4138), वै० ई० (इलै०)
35. एयर कमोडोर अनादि शंकर सरकार, वी० एम० (4273), वै० ई० (यां०) ।
36. एयर कमोडोर श्याम चन्द मेहरा, वी० एस० एम० (4290), वै० इ० (इलै०)।
37. एयर कमोडोर कोटोरपुरथ गोविन्द मोहन चन्द्र (4316), प्रशासन।
38. एयर कमोडोर जगदीश कुमार सेठ, वी० एम० (4403), उड़ान (पाइलट) .
39. एयर कमोडोर मन मोहन सिन्हा, वी० एम० (4408) उड़ान (पाइलट)
40. एयर कमोडोर इन्द्र देव भल्ला (4571), उड़ान (पाइलट) ।
41. एयर कमोडोर अमोलक राम आनन्द (4085) चिकित्सा (सेवानिवृत्ति) ।
42. कर्नल विजय प्रभाकर रणदीवे (आई० सी० 7825) ए० एस० सी०
43. कर्नल नरसिन्हा वेंकटराव कामत (डी० आर० 10054) आर्मी डेंटल कोर ।
44. ग्रुप कैप्टन श्रीपद अच्युत रानाडे (3992), लेखा ।
45. ग्रुप कैप्टन दलीप सिंह सभरवाल, वी० एम० (4756), उड़ान (पाइलट)।
46. ग्रुप कैप्टन इन्द्रकांति गोपाल कृष्ण वी० एस० एम० (5398), वै० ई० (यां०)
47. ग्रुप कैप्टन पृथ्वी सिंह बरार, वी० एम० (6007), उड़ान (पाइलट)
48. कमांडर अरोग्यस्वामी जोसफ पालराज, वी० एस० एम० (50162-बी)।

सं० 17-प्रेज/83—राष्ट्रपति, निम्नांकित व्यक्ति को उनकी असाधारण विशिष्ट सेवा के उपलक्ष्य में "अति विशिष्ट सेवा मैडल का बार" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं:—

1. ब्रिगेडियर जगजीत सिंह (आई० सी० 6601) ए० वी० एस० एम०, वी० एस० एम०, आर्टिलरी।

सं० 18-प्रेज/83—राष्ट्रपति, निम्नांकित व्यक्तियों को उनकी उच्च-कोटि की विशिष्ट सेवा के उपलक्ष्य में "विशिष्ट सेवा मैडल" प्रदान करने के सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. ब्रिगेडियर रविन्दर नाथ भल्ला (आई० सी० 10414), इन्फैन्ट्री।
2. ब्रिगेडियर दर्शन सिंह (एस० एल० 230), ए०पी०टी०सी०।
3. ब्रिगेडियर पुल्लत मुकन्दन मेनन (आई० सी० 6912), ई० एम० ई०।
4. कर्नल सतीश चन्द्र चतुरथ (आई० सी० 7819) ए० ओ० सी०।
5. कर्नल रामदास बोधाराव नाइगीर (आई० सी० 7448) ए०ओ०सी०
6. कर्नल भारत भूषण बिश्नोई (एस० एल० 00215), सिगनल्स।
7. कर्नल कृष्ण मुरारी सिंह (आई० सी० 7333), इन्फैन्ट्री।
8. कर्नल सुन्दरराजन पद्मनाभन (आई० सी० 11859), आर्टिलरी।
9. कर्नल सुशील कुमार विज (आई० सी० 10507), सिगनल्स।
10. कर्नल आल मास्टर (आई० सी० 12071), इन्फैन्ट्री।
11. कर्नल राजगोपाल सेन्थामाराय कण्णन (आई० सी० 12253), ई० एम० ई०।
12. कर्नल वासुदेव रौते (एम० आर० 00949) ए० एम० सी०।
13. कर्नल (श्रीमती) निर्मल आहूजा (एम० आर० 01172) ए० एम० सी०
14. कर्नल कृष्णानन्द सरवाना (आई० सी० 8641), ए० ई० सी०।
15. कैप्टन जगबीर सिंह विर्क (60052-एफ), आई० एन०।
16. कार्यकारी कैप्टन पुवेनमहाथिल इट्टियेराह उम्मन (70047-वाई) आई० एन०।
17. लेफ्टिनेन्ट कर्नल हरिन्द्र सिंह सोढी (आई सी० 11010), आर्मर्ड कोर।
18. लेफ्टिनेन्ट कर्नल कमलजीत सिंह (आई० सी०12536), आर्मर्ड कोर।
19. लेफ्टिनेन्ट कर्नल राम कृष्ण शर्मा (आई० सी० 7030), आर्टिलरी।
20. लेफ्टिनेन्ट कर्नल यादव राय जेटली (आई० सी० 12111), आर्टिलरी।
21. लेफ्टिनेन्ट कर्नल गुरपाल सिंह छतवाल (आई० सी० 15453) आर्टिलरी।
22. लेफ्टिनेन्ट कर्नल सुधीर कुमार सारदा (आई० सी० 12099), वीर चक्र महार।
23. लेफ्टिनेन्ट कर्नल बीरेन्द्र मोहन मेहता (आई० सी० 12533), गोरखा राइफल्स।
24. लेफ्टिनेन्ट कर्नल हरकीरत सिंह (आई० सी० 14005), ग्रिनेडियर्स
25. लेफ्टिनेन्ट कर्नल थेलगण्डा मुद्दप्पा मुथप्पा (आई० सी० 14214), बिहार।
26. लेफ्टिनेन्ट कर्नल गुरदेव सिंह (आई० सी० 14367), डोगरा।
27. लेफ्टिनेन्ट कर्नल के० पी० बालाकृष्णन नाम्बियार (आई० सी० 14458), मद्रास।
28. लेफ्टिनेन्ट कर्नल अमल कुमार सान्याल (आई० सी० 14500), गोरखा राइफल्स।
29. लेफ्टिनेन्ट कर्नल पिनाकी बसु (आई० सी० 15930), बिहार।
30. लेफ्टिनेन्ट कर्नल जोगिन्दर जसवन्त सिंह (आई० सी० 16078), मराठा लाईट इन्फैन्ट्री।
31. लेफ्टिनेन्ट कर्नल राजकुमार सिंह (आई० सी० 16137), गढ़वाल राइफल्स।
32. लेफ्टिनेन्ट कर्नल अब्दुल रसूल खान (आई० सी० 20319), ग्रिनेडियर्स।
33. लेफ्टिनेन्ट कर्नल कैलाश चन्द्र ढींगरा (आई० सी० 12505), इंजीनियर्स।
34. लेफ्टिनेन्ट कर्नल शरद चन्द्र आबाजी देशपांडे (आई० सी० 10625) ई० एम० ई०।
35. लेफ्टिनेन्ट कर्नल कोना कन्ना राव (आई० सी० 13721), ई० एम० ई०
36. लेफ्टिनेन्ट कर्नल वसंत विष्णु प्रभुदेसाई (आई० सी० 14301), ई० एम० ई०।
37. लेफ्टिनेन्ट कर्नल सजल कांति घोष (आई० सी० 14865), ई० एम० ई०।
38. लेफ्टिनेन्ट कर्नल गिरधर गोपाल अग्रवाल (आई० सी० 12011), ए० एस० सी०।
39. लेफ्टिनेन्ट कर्नल वेन्नुर नागेश राव (आई० सी० 12593), ए० ओ० सी०।
40. लेफ्टिनेन्ट कर्नल बी० रत्नाकर शेट्टी (वी 172), आर० वी० सी०।
41. लेफ्टिनेन्ट कर्नल सत्य प्रकाश मल्होत्रा (आई० सी० 11217), इन्ट० कोर।
42. लेफ्टिनेन्ट कर्नल महेन्द्र कुमार सेठ (एम० आर० 01001), ए० एम० सी०।
43. लेफ्टिनेन्ट कर्नल गुन्टूर बुची वैंकट लक्ष्मण शास्त्री (आई० सी० 7733), पंजाब (सेवा-निवृत्त)।
44. कमांडर महेन्द्र सिंह रावत (00175 वाई)।
45. कमांडर केवल कृष्ण गुलाटी (60059 वाई)।
46. कमांडर परुम्पलेथ विल्सा जानसन जैकब (00511 के)।
47. सर्जन कमांडर अशोक कुमार चटर्जी (75069 के)
48. कमांडर बुद्धदेव सेनगुप्ता (40342 के)।
49. कार्यकारी कमांडर वातला साई प्रसाद वर्मा (50199 एन)।
50. कमांडर (एम० डी० बी०) प्रीतपाल सिंह (83169 डब्ल्यू)।
51. विंग कमांडर राजिन्दर कुमार चौधरी (6122) उड़ान (नेविगेटर) भारतीय वायुसेना।
52. विंग कमांडर जसवंत सिंह कुमार (6186), परिभारिकी।
53. विंग कमांडर घनश्याम गुदरानी (6387), वै० इ० (यां०)।
54. विंग कमांडर वीरेन्द्र कुमार जैन (6389), वै० इ० (यां०)।
55. विंग कमांडर रवीन्द्र मोहन सिंह चढ्ढा (6588), वै० इ० (यां०)।
56. विंग कमांडर कोंडैयाह रामपति (6813), वै० इ० (यां०)।
57. विंग कमांडर सुरिन्द्र मोहन भाटिया (7066), वै० इ० (यां०)।
58. विंग कमांडर सतीश गोविन्द इनामदार (7189) उड़ान (पाइलट)।
59. विंग कमांडर दिलीप कमालकर पाठलकर, वी० एम० (7227), उड़ान (पाइलट)।
60. विंग कमांडर मारणजीत सिंह (7356), वै० इ० (इलै०)।
61. विंग कमांडर सुन्दर कृष्ण सुरेश सीताराम (7910), वै० इ० (इलै०)।
62. विंग कमांडर वीरेन्द्र प्रधान (8173) उड़ान (पाइलट)।
63. मेजर विजय कुमार बक्शी (आई० सी० 14208), आर्टिलरी।
64. मेजर सुभाष चन्द्रन नाम्बियार (आई० सी० 23889) मराठा लाईट इन्फैन्ट्री।
65. मेजर खीम सिंह (आई० सी० 24258), डोगरा।
66. मेजर आसिस डे (एम० आर० 03851), ए० एम० सी०।

67. मेजर तिरुमलै नल्लन चक्रवर्ती विजयासारथी (आई० सी० 28826), मद्रास ।

68. मेजर राज कुमार मनचन्दा (आई० सी० 16541) ई० एम० ई० ।

69. मेजर परुम्पिलीपडी इरवि रामचन्द्रन नायर (एम० एल० 1500), ए० एस० सी० (केटरिंग) ।

70. मेजर गोवर्धन व्यास (एम० आर० 02643), ए० एम० सी० ।

71. मेजर देस राज शर्मा (आई० सी० 26414), पंजाब ।

72. सर्जन लेफ्टिनेन्ट कमांडर जोसफ इविकुला (75102के) ।

73. लेफ्टिनेन्ट कमांडर पोटेंगल कृष्णन विश्वनाथन (50276एन) ।

74. लेफ्टिनेन्ट कमांडर सिंगारवेलु वैथिनाथन (40402वाई) ।

75. लेफ्टिनेन्ट कमांडर छोटू खान (एस० डी० बी० एम०) (84251 बी) ।

76. लेफ्टिनेन्ट कमांडर (एम० डी० ए० ई०) नवामोनी सुफनाराज सैमयुल (86001 एफ), (सेवा-निवृत्त) ।

77. स्क्वाड्रन लीडर जगदीश चन्द्र मलिक (6989), शिक्षा ।

78. स्क्वाड्रन लीडर गुलशन राय मल्होत्रा (8257), वै० इ० (इलै०) ।

79. स्क्वाड्रन लीडर प्रताप सिंह (8897), वै० इ० (इलै०) ।

80. स्क्वाड्रन लीडर बलदेव सिंह चीमा (8902), वै० इ० (यां०) ।

81. स्क्वाड्रन लीडर सैमुएल साइमन (9184), प्रशासन ।

82. स्क्वाड्रन लीडर जयंती स्वरुप (9220), प्रशासन ।

83. स्क्वाड्रन लीडर रामकृष्ण सोमनाथ (10780), वै० इ० (इलै०) ।

84. स्क्वाड्रन लीडर राजवीर यादव (11354), उड़ान (नेविगेटर) ।

85. स्क्वाड्रन लीडर राजगोपाला सुन्दर रामन (11977), वै० इ० (इलै०) ।

86. कैप्टन हितेन्द्र नारायण घोष (आई० सी० 33386), गोरखा राइफल्स ।

87. कैप्टन धर्म राज सिंह (आई० सी० 36332), महार ।

88. कैप्टन विजय कुमार वाडिया (एम० आर० 3717), ए० एम० सी० ।

89. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट मन मोहन सिंह (11953), परिभारिकी ।

90. सब लेफ्टिनेन्ट फारुख फरमारोज तारापुर (02296टी) ।

91. फ्लाइंग अफसर गौतम कुमार दासगुप्ता (15497), वै० इ० (इलै०) ।

92. जे० सी० 47838 सूबेदार मेजर बुधी बहादुर गुरुंग, गोरखा राइफल्स ।

93. जे० सी० 61898 सूबेदार मेजर हरका बहादुर गौतम, गोरखा राइफल्स ।

94. जे० सी० 61444 सूबेदार मेजर प्यारा सिंह, ए० ओ० सी० ।

95. पाल सिंह सान्धु, एम० सी० ई० ए० I (048195-के) ।

96. मेलिन भास्करन, एम० सी० ई० ए० ए० आर० I (050147 वाई) ।

97. परमेश्वरन विजयन एम० एम० सी० पी० ओ० I (063715 एच) ।

98. मोहिन्दर सिंह, एम० सी० ए० (एस० इ०) I (064259 डब्ल्यू), सेवा-निवृत्त ।

99. 201281 मास्टर वारंट अफसर विशम्भर नाथ भसीन, एयर फ्रेम फिटर

100. 208070 मास्टर वारंट अफसर संत कुमार, वर्कशाप फिटर (सी० एंड एस० एम० डब्ल्यू) ।

101. कंवल नयन सिंह, एम० सी० ए० ए-II (091720-एफ) ।

102. जे० सी० (एन० वाई० ए०)-5744942 नायब सूबेदार बीरेन्द्र सिंह थापा, गोरखा राइफल्स ।

103. स्वदेश रंजन अधिकारी, सी० पी० ओ० आर० (डेल) 087894के ।

104. 243802 जूनियर वारंट अफसर मलामल नील नवेरी उन्नीकृष्णन, रडार फिटर ।

105. श्री के० जुहेटो मु (2007) कीर्ति चक्र, कमांडेंट, बी० एस० एफ० ।

106. श्री मलहर पुरुषोत्तम चिटनिस, कमांडेंट, सी० आर० पी० एफ० ।

सं० 19-प्रेज/83—राष्ट्रपति, निम्नांकित व्यक्ति को उनकी असाधारण विशिष्ट सेवा के उपलक्ष्य में "विशिष्ट सेवा मैडल का बार" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. कर्नल जगदीश नारायण (आई० सी० 11728), वी० एस० एम०, इंजीनियर्स ।

नई दिल्ली, दिनांक 26 जनवरी 1983

सं० 20-प्रेज/83—राष्ट्रपति, निम्नांकित व्यक्ति को उनकी अति असाधारण विशिष्ट सेवा के उपलक्ष्य में "परम विशिष्ट सेवा मैडल" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं : —

1. लेफ्टिनेन्ट जनरल तिलक बहादुर नन्दा (आई० सी०-1001), इंजीनियर्स ।

सं० 21-प्रेज/83—राष्ट्रपति, निम्नांकित व्यक्ति को उनकी उच्च कोटि की विशिष्ट सेवा के उपलक्ष्य में "विशिष्ट सेवा मैडल" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

1. जे० सी० 39323 सूबेदार मेजर (मानार्थ कैप्टन) विश्वनाथ भोसले, वीर चक्र, महार ।

सु० नीलकण्ठ, राष्ट्रपति का उप सचिव

विदेश मंत्रालय

(हज सैल)

नई दिल्ली, दिनांक 9 फरवरी, 1983

प्रस्ताव

सं० एम० (हज) 118-1/1/81—भारत सरकार ने अपने प्रस्ताव सं० एम (हज) 118-1/1/81, दिनांक 10 नवम्बर, 1981 के अन्तर्गत वर्ष 1981-82 के लिए केन्द्रीय हज सलाहकार बोर्ड के पुनर्गठन की घोषणा की थी ।

2. भारत सरकार ने अब यह निर्णय लिया है कि 1981-82 के लिए गठित केन्द्रीय हज सलाहकार बोर्ड की अवधि को नवम्बर, 1983 तक बढ़ाया जाए ।

आदेश

यह आदेश किया जाता है कि इस प्रस्ताव की एक प्रति भारत सरकार के सभी मंत्रालयों, प्रधान मंत्री के कार्यालय, मंत्रिमंडल सचिवालय, संसदीय कार्य विभाग, लोक सभा और राज्य सभा सचिवालय, सभी राज्य सरकारों, केन्द्र प्रशासित क्षेत्रों, हज समिति, बम्बई, सभी राज्य हज समितियों और मुगल लाईन लिमिटेड, बम्बई को सूचनार्थ भेजी जाए ।

यह भी आदेश किया जाता है कि यह प्रस्ताव भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए ।

एम० एच० अन्सारी, संयुक्त सचिव (हज)

विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग

नई दिल्ली-110 001, दिनांक 22 फरवरी 1983

सं० 1/4/82-कमेटी—सर्वसाधारण की जानकारी के लिए यह अधिसूचित किया जाता है कि श्री शिवराज वी० पाटिल, राज्य मंत्री, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, इलैक्ट्रानिकी तथा सागर विकास, नई दिल्ली, को भारत सरकार ने पुनर्गठित सोसायटी (वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद्) के सदस्य के रूप में दो वर्ष की अवधि के लिए दिनांक 6 जून, 1982 से यथा अधिसूचना क्रमांक 1/4/82 कमेटी, दिनांक 1 जुलाई, 1982 द्वारा वर्तमान सोसायटी के बाकी समय दिनांक 5 जून, 1984 तक के लिये मनोनीत किया है।

जी० एस० सिद्धू
सचिव, भारत सरकार
विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग
सी०एस०आई०आर० कार्यों के लिए व
महानिदेशक
वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान
नई दिल्ली

पर्यावरण विभाग

नई दिल्ली-110011, दिनांक 18 फरवरी 1983

संकल्प

विषय : दून घाटी तथा गंगा और यमुना के निकटवर्ती जल विभाजक क्षेत्रों के लिए बोर्ड का गठन।

सं० 2/19/81-एच० सी० टी०/इन्वा० 5—विकासात्मक संवेष्टन (पैकेज) का अध्ययन और समीक्षा करने के लिए और न्यूनतम पर्यावरणीय अपकर्ष से सतत विकास प्राप्त करने के लिए पर्यावरणीय प्रबन्ध हेतु मार्गदर्शक सिद्धान्तों का सुझाव देने के लिए इस विभाग के दिनांक 18 अगस्त, 1982 के संकल्प संख्या 2/19/81-एच० सी० टी०/इन्व० द्वारा दून घाटी और गंगा तथा यमुना के निकटवर्ती जल विभाजक क्षेत्रों के लिए गठित बोर्ड की अवधि को 3 फरवरी, 1983 से एक वर्ष की अगली अवधि के लिए और आगे बढ़ाने का निर्णय लिया है :—

2. बोर्ड की संशोधित संरचना निम्नलिखित होगी :—

(1)	श्री दिग्विजय सिंह, पर्यावरण उप मंत्री	अध्यक्ष
(2)	प्रो० एम० जी० के० मेनन, सदस्य, योजना आयोग	सदस्य
(3)	श्री बल्देव सिंह आर्य, परिवहन तथा पर्यटन विकास मंत्री, उत्तर प्रदेश	सदस्य
(4)	श्री हरिश चन्द्र सिंह रावत, संसद सदस्य, 52-54, नार्थ एवेन्यू, नई दिल्ली	सदस्य
(5)	श्री बी० बी० वोहरा, अध्यक्ष, राष्ट्रीय पर्यावरणीय योजना समिति	सदस्य
(6)	श्री आर० पी० खोसला, मुख्य सचिव, उत्तर प्रदेश सरकार, सचिवालय, लखनऊ	सदस्य
(7)	श्री अरुण सिंह 30, फिरोशा रोड-सी-1, प्रथम तल, नई दिल्ली	सदस्य
(8)	श्री गुरदयाल सिंह, 99, सेक्टर 8-ए, चण्डीगढ़	सदस्य
(9)	डा० तिलोकी नाथ खुशू, सचिव, पर्यावरण विभाग	सदस्य
(10)	श्री एन० डी० बेजखेती, वन महा निरीक्षक, कृषि मंत्रालय, कृषि भवन, नई दिल्ली	सदस्य
(11)	प्रो० रंजीत सिंह, उद्यान-विज्ञान प्रभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा रोड, नई दिल्ली	सदस्य
(12)	श्री एन० डी० जयाल, संयुक्त सचिव, पर्यावरण विभाग	सदस्य
(13)	डा० एस० मुद्गल, निदेशक, पर्यावरण विभाग	सदस्य सचिव

3. अध्यक्ष को यह प्राधिकारी होगा कि वह जब कभी जरूरी समझे, अन्य सदस्यों को सहयोजित कर सकते हैं।

4. गैर-सरकारी सदस्यों को यात्रा/दैनिक भत्तों का भुगतान जो नियमानुसार देय होगा, पर्यावरण विभाग द्वारा किया जाएगा।

5. बोर्ड के विचारार्थ विषय इस प्रकार होंगे :—

(क) इस क्षेत्र में प्रस्तावित विकासात्मक परियोजनाओं के संवेष्टन (पैकेज) की समीक्षा करना तथा पर्यावरणीय प्रबन्ध हेतु मार्गदर्शक सिद्धान्तों की व्यवस्था करना ताकि क्षेत्रीय संसाधनों का इष्टतम प्रयोग किया जा सके;

(ख) पर्यावरण के और अधिक अपघटन को रोकने के लिए और/अथवा पर्यावरण में सुधार करने के लिए न्यूनकारी/सुधारात्मक उपायों का निष्पादन करने के लिए प्रभावी कार्यान्वयन तंत्र का विकास करना।

6. बोर्ड का कार्यकाल अब 3 फरवरी, 1984 तक होगा।

आदेश

आदेश दिया जाता है इस संकल्प की एक प्रति दून घाटी और गंगा और यमुना के निकटवत जल विभाजक क्षेत्रों के बोर्ड के अध्यक्ष तथा अन्य सभी सदस्यों को प्रेषित की जाये। यह भी आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को जनसाधारण की सूचना के लिए भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाये।

त्रिलोकी नाथ खुशू, सचिव

कृषि मंत्रालय

(कृषि और सहकारिता विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 26 फरवरी 1983

संकल्प

सं० 282/80एस० सी०(टी)—देश के भूसंसाधनों की सुदृढ़ता और वैज्ञानिक प्रबन्ध से संबंधित मुद्दों के लिये नीति को आयोजना करने, उनमें समन्वय करने और उनकी देखरेख करने के लिए एजेंसी के रूप में एक केन्द्रीय निकाय की स्थापना करने का प्रश्न पिछले कुछ समय से भारत सरकार के विचाराधीन रहा है। यह निर्णय लिया गया है कि कृषि मंत्रालय के कृषि और सहकारिता विभाग में राष्ट्रीय भूमि बोर्ड और राष्ट्रीय भू-संसाधन संरक्षण और विकास आयोग की स्थापना की जाए, जिसका गठन, भूमिका और कार्य निम्नलिखित होंगे :—

1. राष्ट्रीय भूमि बोर्ड :

I. गठन :

(1) केन्द्रीय कृषि मंत्री	अध्यक्ष
(2) केन्द्रीय सिंचाई मंत्री	सदस्य
(3) केन्द्रीय आवास तथा निर्माण मंत्री	सदस्य
(4) पर्यावरण की देखरेख करने वाला केन्द्रीय मंत्री	सदस्य
(5) सदस्य, योजना आयोग (प्रभारी कृषि)	सदस्य
(6) प्रत्येक राज्य/संघ राज्य क्षेत्र का एक-एक मंत्री	सदस्य
(7) भूसंसाधन आयुक्त (जो राष्ट्रीय भूसंसाधन संरक्षण और विकास आयोग के सदस्य-सचिव भी होंगे)	सदस्य सचिव

II. भूमिका और कार्य :

राष्ट्रीय भूसंसाधन संरक्षण और विकास आयोग की सिफारिशों को जिनमें नीति से सम्बंधित बड़े मुद्दे शामिल हैं, अन्तिम रूप से विचार करने के लिये राष्ट्रीय भूमि बोर्ड के समक्ष रखा जाएगा।

III. बोर्ड की बैठकें :

बोर्ड की वर्ष में कम से कम एक बैठक होगी।

3. राष्ट्रीय भूसंसाधन संरक्षण और विकास आयोग

गठन

(1) सदस्य, योजना आयोग, (प्रभारी कृषि)	अध्यक्ष
(2) भारत सरकार के कृषि, सिंचाई, निर्माण और आवास, ग्रामीण विकास तथा पर्यावरण मंत्रालयों/विभागों के सचिव	सदस्य (5)
(3) भारत सरकार के वन महा निरीक्षक	सदस्य
(4) अध्यक्ष, केन्द्रीय जल आयोग, भारत सरकार	सदस्य
(5) अध्यक्ष, राष्ट्रीय पर्यावरण आयोजना समिति	सदस्य
(6) महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्	सदस्य
(7) कृषि आयुक्त, कृषि और सहकारिता विभाग, भारत सरकार	सदस्य
(8) राज्यों से पांच प्रतिनिधि (प्रत्येक क्षेत्र से एक—क्षेत्र में सदस्यता सदस्य राज्यों को वार्षिक आधार पर बारी-बारी से दी जाएगी—प्रतिनिधि अधिमानतः सम्बंधित राज्य भूमि उपयोग बोर्डों से नामजद किए जायेंगे)	सदस्य (5)
(9) बाढ़ नियन्त्रण भूमि सुधार, मरु/पर्वतीय क्षेत्र/सूखा प्रवरण क्षेत्र/भूमि संरक्षण/नगर और ग्राम आयोजना/दलदल तथा आर्द्र भूमियों का पुनरुद्धार आदि के क्षेत्र के छह विशेषज्ञ	सदस्य (6)
(10) भूमि संसाधन आयुक्त (जो राष्ट्रीय भूमि बोर्ड के सदस्य सचिव के रूप में भी कार्य करेगा)	सदस्य-सचिव

आयोग, जैसी भी आवश्यकता होगी विशेषज्ञों को आमंत्रित/सहयोजित कर सकता है और विशेष समस्याओं का अध्ययन अथवा उनके संबंध में कागजात/रिपोर्टें तैयार करने के प्रयोजन से विशेषज्ञ समूहों की स्थापना कर सकता है।

II. भूमिका और कार्य :

(1) भूमि के उचित उपयोग तथा मिट्टी की क्षमता और अन्य घटकों को ध्यान में रखते हुए देश के भू-संसाधनों के संरक्षण, प्रबन्ध और विकास के लिए राष्ट्रीय नीति तथा संदर्श योजना तैयार करना।

(2) मृदा संरक्षण तथा विकास और सम्बद्ध मामलों, विशेष रूप से निम्नलिखित मामलों से सम्बन्धित योजनाओं और कार्यक्रमों के कार्यान्वयन की प्रगति की पूरी तरह संवीक्षा करना :

(क) किसानों के खेतों की मिट्टी का सुधार तथा संरक्षण ;

(ख) नदी घाटी परियोजनाओं तथा बाढ़ प्रवण नदियों के स्रवण क्षेत्रों में समेकित भूमि की व्यवस्था ;

(ग) सामाजिक वानिकी;

(घ) बाढ़ नियन्त्रण ;

(ङ) क्षारीय तथा लवणीय भूमि का सुधार;

(च) ऊबड़-खाबड़ भूमि का सुधार;

(छ) दलदल वाली तथा आर्द्र भूमि का सुधार;

(ज) मृदा की उर्वरता में सुधार तथा उसका रख-रखाव;

(झ) सूखा प्रवण क्षेत्र तथा रेगिस्तान विकास; और

(ञ) नगर तथा गांव आयोजना।

(3) मृदा सर्वेक्षणों से संबंधित प्रस्तावों पर विचार करना और उनकी संवीक्षा करना तथा भू-संसाधनों का सामान्य रूप से मूल्यांकन करना;

(4) मृदा की उचित व्यवस्था के महत्व और समस्याओं के बारे में सामान्य जागरुकता पैदा करने के उपाय करना;

(5) यह सुनिश्चित करने के लिये कि अच्छी कृषि भूमि का गैर-कृषि प्रयोजनों के लिये अंधाधुंध प्रयोग नहीं किया जा रहा है, से संबंधित उपायों पर विचार करना;

(6) राज्य भू-उपयोग बोर्डों के कार्य में समन्वय करना; और

(7) राष्ट्रीय स्तर की बड़ी-बड़ी नीतियों के मुद्दों के सम्बन्ध में अपनी सिफारिशों को राष्ट्रीय भूमि बोर्ड के विचारार्थ भेजना।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक-एक प्रति सभी संबंधितों को भेज दी जाए।

यह आदेश भी दिया जाता है कि संकल्प को सामान्य सूचना हेतु भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

एस० पी० मुखर्जी, सचिव

उद्योग मंत्रालय

(औद्योगिक विकास विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 18 फरवरी 1983

संकल्प

सं० 07011/3/83-नमक—नमक के राजस्थान क्षेत्रीय सलाहकार बोर्ड का पुनर्गठन करने के बारे में इस मंत्रालय के संकल्प सं० 07011/1/80-नमक, दिनांक 14-10-81 और 18-4-82 के क्रम में भारत सरकार ने हिमाचल प्रदेश में नमक उद्योग के हितों का प्रतिनिधित्व करने के लिए निम्नलिखित व्यक्तियों को नामित करने का निर्णय लिया है :—

1. ठाकुर कौल सिंह, विधान सभा सदस्य, हिमाचल विधान सभा

2. श्री ब्रह्मानन्द, उप प्रधान, ग्राम पंचायत, पी० ओ०, भरारु, तहसील जोगिन्दर नगर, जिला मण्डी (हि० प्र०)।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि यह संकल्प सभी राज्य सरकारों, भारत सरकार के सभी मंत्रालयों, योजना आयोग, मंत्रिमंडल सचिवालय और प्रधान मंत्री के कार्यालय को भेज दिया जाए।

यह भी आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को भारत के राजपत्र के भाग-I, खण्ड-1, में प्रकाशित कर दिया जाए।

एम० बी० गोयल, उप सचिव

शिक्षा और संस्कृति मंत्रालय

(शिक्षा विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 21 फरवरी 1983

संकल्प

सं० ई-11011/34/81-हिन्दी समन्वय एकक—भारत सरकार ने शिक्षा और संस्कृति मंत्रालय के लिए एक हिन्दी सलाहकार समिति गठित करने का निर्णय किया है। समिति का गठन तथा तथा कार्य इत्यादि निम्नलिखित होंगे :—

I. गठन :

1. शिक्षा और संस्कृति तथा समाज कल्याण मंत्रालयों में राज्य मंत्री	अध्यक्ष
2. शिक्षा और संस्कृति तथा समाज कल्याण मंत्रालयों में उप मंत्री	उपाध्यक्ष
लोक सभा के दो प्रतिनिधि :	
3. श्रीमती सुमति ओरान, लोक सभा सदस्य	सदस्य
4. श्री बापू राव परांजपे, लोक सभा सदस्य	सदस्य
राज्य सभा के दो प्रतिनिधि	
5. श्री राम पूजन पटेल, राज्य सभा सदस्य,	सदस्य
6. श्री राम भगत पासवान, राज्य सभा सदस्य	सदस्य
संसदीय राजभाषा समिति के दो प्रतिनिधि :	
7. प्रो० के० के० तिवारी, लोक सभा सदस्य	सदस्य
8. श्री अमर राय प्रधान, लोक सभा, सदस्य	सदस्य

गैर-सरकारी सदस्य :

(स्वैच्छिक संगठनों इत्यादि के प्रतिनिधि)

9. सचिव, अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ, नई दिल्ली — सदस्य

10. सचिव, नागरी प्रचारिणी सभा, डा० राजेन्द्र प्रसाद रोड, नई दिल्ली

11. अध्यक्ष, केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद, एस० बाई०-68, सरोजनी नगर, नई दिल्ली-110023 — सदस्य

12. श्री बी० डी० कृष्णन निम्बियार, सचिव, केरल, हिन्दी साहित्य मण्डल, केरल — सदस्य

13. श्रीमती रागिनी मिश्र, डी-II/312, चाणक्यपुरी, विनय मार्ग, दिल्ली — सदस्य

14. श्री प्रभात शास्त्री, महा सचिव, हिन्दी साहित्य मण्डल, प्रयाग (उ० प्र०), कवि कुटीर दारागंज, इलाहाबाद-211006 — सदस्य

15. डा० शशि तिवारी, संस्कृत विभाग, मैत्रेयी कालेज, नई दिल्ली — सदस्य

सरकारी सदस्य :

(राज भाषा विभाग, गृह मंत्रालय के प्रतिनिधि)

16. सचिव, राज भाषा विभाग तथा भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार — सदस्य

17. संयुक्त सचिव, राज भाषा विभाग, गृह मंत्रालय। — सदस्य

(शिक्षा और संस्कृति मंत्रालय तथा इसके अधीनस्थ/संलग्न कार्यालयों के प्रतिनिधि)

18. शिक्षा सचिव . . . सदस्य

19. अपर सचिव . . . सदस्य

20. शिक्षा सलाहकार . . . सदस्य

21. शिक्षा सलाहकार (तकनीकी) . सदस्य

22. संयुक्त सचिव (प्रशासन) . . सदस्य

23. संयुक्त शिक्षा सलाहकार (भाषा और संस्कृति) . . सदस्य

24. महानिदेशक, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण . . . सदस्य

25. निदेशक, भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार . . . सदस्य

26. निदेशक राष्ट्रीय संग्रहालय . . . सदस्य

27. लेखा नियंत्रक, शिक्षा तथा संस्कृति मन्त्रालय . . . सदय

28. निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय — सदस्य

29. निदेशक, प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय . . . सदस्य

30. निदेशक (हिन्दी) . . सदस्य-सचिव

II. कार्य

यह समिति सरकारी प्रयोजनों के लिए हिन्दी के प्रगामी प्रयोग से सम्बन्धित तथा सहायक और प्रासंगिक मामलों पर मन्त्रालय और इसके सम्बद्ध/अधीनस्थ कार्यालयों को सलाह देगी।

III. कार्यकाल

समिति का कार्यकाल सामान्यत: इसके प्रथम गठन की तारीख से तीन वर्ष होगा, बशर्ते कि :

(क) समिति के नामजद संसद-सदस्य की सदस्यता उनके संसद सदस्य न रहने पर समाप्त हो जाएगी।

(ख) समिति के पदेन सदस्य उस समय तक सदस्य रहेंगे जब तक वह उस पद पर रहते हैं, जिसके नाते वे इस समिति के सदस्य हैं।

(ग) किसी सदस्य के त्यागपत्र, मृत्यु, इत्यादि से यदि कोई स्थान रिक्त हो जाता है तो इस रिक्ति में नियुक्त सदस्य तीन वर्ष की शेष अवधि के लिए सदस्य रहेगा।

IV. कोरम

समिति की बैठकों के कोरम के लिए समिति के कुल सदस्यों की एक-तिहाई संख्या होगी।

V. सामान्य :

(1) समिति सहयोजित सदस्यों के रूप में अतिरिक्त सदस्य नामजद कर सकती है और बैठकों में भाग लेने के लिए आवश्यकतानुसार विशेषज्ञों को भी आमंत्रित कर सकती है।

(2) समिति का मुख्यालय नई दिल्ली में होगा।

VI. यात्रा तथा अन्य भत्ते

समिति की बैठकों में भाग लेने के लिए गैर-सरकारी सदस्यों को यात्रा तथा दैनिक भत्ता दिया जायेगा।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक-एक प्रति समिति के सभी सदस्यों, सभी राज्य सरकारों, संघ शासित क्षेत्रों, के प्रशासनों, प्रधान मन्त्री कार्यालय, मंत्रिमंडल सचिवालय, संसदीय कार्य विभाग, लोक सभा सचिवालय, राज्य सभा सचिवालय, राष्ट्रपति सचिवालय, योजना आयोग, भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक और भारत सरकार के सभी मंत्रालयों और विभागों को भेज दी जाए।

यह भी आदेश दिया जाता है कि सर्वसाधारण की सूचना के लिए यह संकल्प भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

दया शंकर मिश्र
संयुक्त सचिव (प्रशासन)

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 26th January 1983

No. 13-Pres./83.—The President is pleased to approve the award of 'KIRTI CHAKRA' to the undermentioned persons for acts of conspicuous gallantry :—

1. BRIGARDIER SOM PARKASH JHINGON (IC-8424), INFANTRY.

(Effective date of award : 25th May, 1981)

Brigadier Som Parkash Jhingon took over the command of a Mountain Brigade deployed in Counter Insurgency Operations on 11th February, 1981. Immediately on taking over, he carried out an extensive reconnaissance of his area of responsibility and having assessed the situation, displayed a professional competence of a high order in mounting a series of swift, well-coordinated operations against the insurgents. Appreciating the necessity of a close cooperation between all agencies involved in combating insurgency, he estbalished excellent rapport with the para military forces, other intelligence agencies, the civil administration and political leaders, thus maximising the counter insurgency effort in the area. His dynamic leadership, meticulous planning and vigorous execution of counter insurgency operations resulted in his Brigade successfully apprehending a large number of hard core extremists and top echelon leaders in various insurgent groups.

On the 25th May, 1981 in a well conducted operation, his Brigade captured a self-styled C-in-C and two more hard core members of an active insurgent group along with their weapons and ammunition. This resulted in the break up of this extremist organisation. During the period December, 1981 to January, 1982, he intensified operations resulting in the killing/capture of over 70 hard core Peoples' Liberation Army/Peoples' Revolutionary Party of Kangloipak/Kangleipak Communist Party members (including Khundron Shanti, the top Peoples' Revolutionary Party of Kangleipak leader in an encounter), and the seizure of large quantities of arms and ammunition. On 27th January, 1982, he and his escort, in a daring encounter captured two hard core Peoples' Liberation Army jail escapees, carrying a cash award of Rupees 15,000/-.

On 13th April, 1982, Brigadier Som Parkash Jhingon personally led a co-ordinated attack on the Headquarters of the Peoples' Liberation Army at Kedompokpi. During the operation he remained in the forefront personally supervising the cordoning of the village. He remained calm and unperturbed under continuous fire from the trapped extremists and thus inspird his men to maintain relentless pressure. The operation resulted in the death/capture of a large number of hostiles. The success of this operation dealt a severe blow to the Peoples Liberation Army.

Brigadier Som Parkash Jhingon thus displayed exemplary courage, leadership, professional skill and devotion to duty of a very high order.

2. SHRI SURINDER SINGH, ASSISTANT CIVILIAN STAFF OFFICER ARMY HEADQUARTERS. (Posthumous)

(Effective date of award 16th October, 1981)

While on leave, Shri Surinder Singh, Assistant Civilian Staff Officer Army Headquarters, General Staff Branch, Military Training Dte. went to Chandigarh to stay with his brother, Shri Niranjan Singh, an I.A.S. Officer of Punjab Secretariat. On the 16th October 1981, he accompanied his brother to the Secretariat. Whlie entering the Secretariat, some miscreants accosted Shri Niranjan Singh with a view to murder him. Shri Surinder Singh made a daring bid to foil the murderous attack. Seeing the criminals aiming at Shri Niranjan Singh, Shri Surinder Singh leapt towards them with a view to catch hold of one of them. They burned their attention on Shri Surinder Singh and fired at him from a point blank range and thus instantly killing him.

This daring act of conspicuous bravery in which Shri Surinder Singh sacrificed his life and saved a life is the one deserving recognition.

3. SQUADRON LEADER VISVANATHAN NAGARAJAN (8753) FLYING (PILOT)

(Effective date of award : 8th July, 1982)

On the 8th July, 1982, at approximately 1100 hours, while on a RTR commitment from Madras to Cochin in a Dakota aircraft at an altitude of 8000, Squadron Leader Visvanathan Nagarajan (8753), Flying (Pilot), experienced vibration in his starboard engine. He decided to divert to Yolahanka, Bangalore. Since the vibration on the engine kept increasing and the aircraft started losing height, he decided to feather the engine and ejected the load to reduce the weight of the aircraft. With the use of Emergency methods, the propeller would not feather and the aircraft kept going down very fast. Realising the gravity of the situation and knowing that he would not be able to reach Bangalore or any other airfield, he decided to forceland the aircraft in a lake bed, which was the only clear place within reach and amongst generally mountainous terrain, under cloudy weather conditions. He carried out a copybook forced-landing and the aircraft settled in the lake in approximately three feet of water. Squadron Leader Visvanathan Nagarajan handled this grave emergency very successfully and thus saved not only the valuable lives on board but more on ground.

Squadron Leader Visvanathan Nagarajan thus displayed exemplary professional skill, competence and devotion to duty of a high order.

S. NILAKANTAN, Dy. Secy.
to the President

No. 14-pres./83.—The President is pleased to approve the award of 'SHAURYA CHAKRA' to the following persons for acts of gallantry :—

1. SHRI BRAJ RAJ,
SON OF SHRI DHARMENDRA SINGH,
RESIDENT OF VILLAGE PALI,
P.S. SARDHNA, DISTRICT MEERUT.

(Effective date of award—8th October, 1980.)

On the night of the 7th/8th October, 1980, some dacoits raided the house of Shri Jagram Singh in village Pali but met with stiff resistance. In the encounter, a 15-year old boy of the same village named Braj Raj stalked the dacoit leader, Matin Dhobi, and snatched his rifle at great risk to his life and consequently the villagers were able to kill the dacoit leader. Other members of the dacoit gang fired at the villagers and as a result, Braj Raj and some others were wounded. The dacoits fled leaving the dead body of their leader behind.

It was largely due to the gallantry and bravery of Shri Braj Raj that the attempt at dacoity was foiled and the dacoit leader killed.

2. MAJOR BHARAT SINGH (IC-23436) · BIHAR.

(Effective date of award—20th anJuary, 1981.)

On the 20th January, 1981, information was received that an armed gang of hostiles, having infiltrated and established a base in a dense jungle, was planning to ambush troops and vehicles. Major Bharat Singh was placed in command of one of the three columns earmarked by his Battalion to search and destroy the hostiles. The search was to be carried out in torrential rains.

The base of the hostiles was located by one of the other two columns and on hearing the exchange of fire between that column and the hostiles in the hideout, Major Bharat Singh quickly collected together his nearest two sections and after despatching a message to the rest of his men, rushed to the spot, which he judged to be approximately 800 metres to his north east. The hostiles spotted this body of troops and opened fire with automatic weapons. Major Bharat Singh quickly deployed one of his sections to provide covering fire and personally led the other section to charge on the hostile positions. The ensuing encounter led to the capture of six underground elements. Realising the futility of further battle, the hostiles attempted to flee, but by this time the third column, which had also moved to the scene of encounter, prevented their escape. The entire operation resulted in capturing of fifteen underground hostiles and a sizeable store of ammunition besides revealing documents.

Major Bharat Singh thus displayed conspicuous gallantry, perseverence, devotion to duty and inspiring leadership.

3. SHRI ASIT KUMAR KUSHWAHA,
SON OF SHRI VIRENDRA SINGH KUSHWAHA,
119/494, DARSHANPURWA,
KANPUR.

(Effective date of award—16th March, 1981.)

On the 16th March, 1981, two bad-characters, Naresh Sharma and Puttoo Lal, entered the shop "Tarzan Hosiery" of Shri Daya Ram Sharma, a resident of Darshanpurwa, Kanpur. Naresh Sharma fired at Shri Daya Ram Sharma, but missed. Hearing hte sound of firing, some persons reached the spot and caught hold of Naresh Sharma but Puttoo Lal managed to escape. On seeing Puttoo Lal escaping, Shri Asit Kumar Kushwaha, a 16 year old boy, gave him a hot chase, though he was fired at by Puttoo Lal yet he narrowly escaped. He finally caught hold of Puttoo Lal.

Shri Asit Kumar Kushwaha thus displayed exemplary courage and gallantry without caring for his personal life.

4. CAPT PREMJIT (IC-34009) (POSTHUMOUS)
THE PARACHUTE REGIMENT

(Effective date of award—13th September, 1981.)

The Parachute Regiment had organised a 'Paratroopers Nanda Devi Expedition' in September-October, 1981.

Captain Premjit was the leader of a column besides being the signal officer of the expedition. He exhibited tremendous dedication, great enthusiasm and extraordinary sustained courage, in that he as a leader, voluntarily chose to take on the technically difficult task of surmounting the first and the most formidable obstacle of near vertical rock and ice wall leading to the proposed site of patrol base/Camp I.

Captain Premjit was so highly motivated that he, always not caring for his personal comfort and safety, went out of the way to ensure successful accomplishment of the task. His work during the preparatory phase of the assault which comprised the establishment of base camps and opening up of routes along long and treacherous stretches through South Ridge at Nanda Devi, as also his manning of the signal communications, was in the best traditions of mountaineers and the Parachute Regiment. After a gruelling climb Captain Premjit and his companions acceeded in scaling the summit of Nanda Devi East successfully. However, during the descent he slipped over the verglass (layer of frozen ice over the rocks) and died of a fatal fall.

Captain Premjit thus displayed exemplary courage, team spirit and devotion to duty of a high order.

5. HAVILDAR DAYA CHAND (13604046) S.M.
PARACHUTE REGIMENT. *(Posthumous)*

(Effective date of award—13th September, 1981)

The Parachute Regiment had organised a 'Paratroopers Nanda Devi Expedition' in September/October in 1981.

Havildar Daya Chand was detailed as the lead climber of his column during the route opening over the technically difficult and hazardous south ridge of Nanda Devi East. Throughout he exhibited devotion beyond the call of duty and extraordinary courage and spirit of comradeship. During 21st to 26th September, 1981, while the route between Camp II and patrol base/Camp III was being negotiated by sub patrol No. 3, Havildar Daya Chand was always in the forefront to ferry heavy loads of vital equipment & food. On 24th September, 1981, when the weather had deteriorated alarmingly and movement became extremely risky, Havildar Daya Chand continued to ferry voluntarily critical items of equipment and food required at Camp III.

Havildar Daya Chand set a new record by putting five sumiteers on one rope, bringing the total number of summiteers to eleven, the highest number ever climbed in one expedition.

Unfortunately, while attempting to strengthen the tent anchors during the descent, he slipped over a verglass (thin layer of ice frozen over the rock) in front of the tent and died of a fatal fall.

Havildar Daya Chand thus displayed exemplary courage, team spirit and devotion to duty of a high order.

6. SHRI PHURBA DORJEE, CIVILIAN INSTRUCTOR. *(Posthumous)*

(Effective date of Award—13th September, 1981)

The Parachute Regiment had organised a 'Paratroopers Nanda Devi Expedition' in September/October, 1981.

Shri Phurba Dorjee, a Sherpa Instructor of Himalayan Mountaineering Institute, Darjeeing, was employed by the expedition as a Sherpa Sirdar-cum-technical adviser. A highly experienced instructor, he dispalyed tremendous energy, enthusiasm and courage of a high order. He volunteered to accompany the East Patrol since the aim of this patrol was to attempt Nanda Devi East, an extremely difficult peak. He volunteered to accompany the Captain Premjit and between the two, they succeeded in surmounting the most formidable obstacle of 1,500 ft. of vertical rock and ice wall within a short time of two days. He, carrying full loads to stock camp/patrol base, always accompanied the patrol leader.

Shri Phurba Dorjee also exhibited tremendous team spirit, exemplary courage and devotion to duty of the highest order, when on 4th October, 1981, while the weather had cleared up, he voluntarily accompanied his leader in the ascent of the difficult and hazardous Nanda Devi East. Unfortunately, while returning from the summit, he and his leader slipped over the verglass and died due to a fatal fall.

Shri Phurba Dorjee thus displayed exemplary courage, team spirit and devotion to duty of a high order.

7. 4240781 LANCE HAVILDAR SRI DHORO MAJHI
BIHAR REGIMENT. *(Posthumous)*

(Effective date of award—9th November, 1981)

On the night of the 9th/10th November 1981, Lance Havildar Sri Dhoro Majhi was the leading section Commander of a platoon which was spear-heading the advance of a Battalion of Bihar Regiment into hostile territory in Arunachal Pradesh. When the leading section neared Phangsan village, Lance Havildar Sri Dhoro Majhi saw two men suddenly getting up from the track and running back towards the village. Informing his platoon Commander, he started chasing the two men.

As the section approached the village, the hostiles opened fire with an LMG and 5 to 6 Rifles. Having faced similar ambushes twice earlier, Lance Havildar Sri Dhoro Majhi remained calm and cool and in spite of being hit by a bullet in the left arm, effectively deployed his section to return the fire. However, due to excessive bleeding, Lance Havildar Sri Dhoro Majhi began to weaken rapidly, but he continued encouraging the young soldiers of his section to continue firing to maintain pressure on the hostiles. Enthused and encouraged by their leader; the section forced the hostiles to withdraw from the village. However, in the meanwhile Lance Havildar Sri Dhoro Majhi collapsed and utimately succumbed to his injuries.

Lance Havildar Sri Dhoro Majhi thus displayed exceptional devotion to duty and exemplary courage in the face of armed hostiles and in doing so sacrificed his own life.

8. 2ND LIEUTENANT SUSANTA KUMAR SATHPATHY (SS-30846), BIHAR.

(Effective date of award : 11th December, 1981)

2nd Lieutenant Susanta Kumar Sathpathy, commissioned in the Army in 1981, had been posted in insurgent prone areas since October, 1981. On the 11th December, 1981, the officer was detailed on a routine patrol in Keisampat, Imphal. While patrolling, the officer reached the Kangliepak unmansang press. Although there had been no intelligence reports to suggest any link of this press with the extremists yet suspecting that the extremist organisation could be utilising it for printing subversive material, the young officer decided to carry out cursory investigation. The workers on the press were caught completely unawares by the presence of the troops. Observing their suspicious reaction, the officer promptly ordered a cordoning off of the area. This resulted in the capture of extremely important documents relating to policy matters of the outlawed peoples' Liberation Army, apart from various other items. In addition, 2nd Lieutenant Susanta Kumar Sathpathy succeeded in capturing four confirmed extremists from the premises of the press.

The next day, he was also successful in capturing a hard core extremist, Durlav Chandra Tamoli, who was known to be a link between peoples' Liberation Army and the Assam movement and recovered from him a loaded countrymade pistol.

In subsequent follow-up actions after interrogation of the captured extremists, the officer raided a house from where he recovered a large quantity of ammunition on 27th December, 1981. He also apprehended two hard core peoples' Liberation Army members and recovered from them people's Liberation Army literature and ammunition.

On the 31st December, 1981, the officer again led a column to raid a house in Tera Bazar area, Imphal. An extremist, who had taken shelter in the house, though surprised, attempted to throw a hand granade at the officer and his men. Second Lieutenant Susanta Kumar Sathpathy, in utter disregard to his personal safety, overpowered the extremist after a hand to hand struggle.

Second Lieutenant Susanta Kumar Sathpathy has thus continuously displayed gallantry initiative, presence of mind, courage and devotion to duty of a high order under adverse conditions.

9. 2462350 SEPOY LAKHA SINGH, PUNJAB.

(Effective date of award : 13th December, 1981)

On the night of the 12th/13th December, 1981, Sepoy Lakha Singh, while on duty as an unarmed sentry in the office area of a Divisional Camp, observed two men moving in a suspicious manner in the office premises. He challenged the men and caught hold of one of the intruders by the arm and at that moment the other intruder fired at Sepoy Lakha Singh with a 12 bore Country Pistol. In the confusion that ensued the two intruders ran in different directions. Sepoy Lakha Singh raised an alarm and with great courage and total disregard to his personal safety, chased and apprehended one of the introducers, who was later identified as a notorious enemy agent.

In this action Sepoy Lakha Singh displayed courage and devotion to duty of a high order.

10. MAJOR RAJEEV LOCHAN SINGH (IC-24347) RAJPUTANA RIFLES.

(Effective date of award : 17th December, 1981)

On the 17th December, 1981, at 0600 hours, Major Rajeev Lochan Singh was leading a column of troops to an area on receipt of specific information regarding the assembly of a few armed extremists belonging to an outlawed organisation. Just as his troops reached the general area indicated, Major Rajeev Lochan Singh saw a man running towards a group of houses. With a comendable presence of mind and initiative, he ordered his men to apprehend the insurgent and began chasing the insurgent himself. The insurgent repeatedly fired from his pistol at the officer and his men with a view to shake off the pursuers. Showing courage beyond the call of duty and in utter disregard to his personal safety, Major Rajeev Lochan Singh continued to encourage and lead his men and did not give up the chase even when one of his men had been mortally wounded by the insurgent. Finally, after a relentless chase through houses and across country over a distance of aproximately 1000 yards. Major Rajeev Lochan Singh managed to close in and wound the insurgent and apprehend him and disarm him. The insurgent was later identified as an important underground leader.

During this entire action Major Rajeev Lochan Singh displayed courage, conspicuous gallantry and devotion to duty of a very high order.

11. LIEUTENANT COMMANDER MOHAMMUD ABDUL RAIHAN SUBHAN (01115-H)

(Effective date of award : 30th December, 1981)

On the 30th December, 1981, during a practice firing, a missible launched by an Indian Naval Ship exploded prematurely damaging its own hangar and spraying the adjacent one with burning fuel and oxidiser. The fuel tank of the second missile exploded setting the ship ablaze posing grave danger to the life of all on board, with immediately possibility of the ship becoming a total loss and also causing serious damages to INS Shakti which was very close. The pilot house and operations room rapidly filled with dense smoke and toxic fumes.

Reacting coolly to the grave situation, Lieutenant Commander Mohammud Abdul Raihan Subhan, the Commanding Officer, attempted to find his way to the bridge but failed to do so. He then came out to the starboard waist to see the port side of his ship burning furiously with a pall of smoke obscuring vision. The ship was also closing Indian Naval ship Shakti which was then only two cables forward of the beam and had tons of fuel on board which could catch fire instantaneously. He thus climbed up to the bridge from the starboard waist to gain access to the pilot house. With the clear view of the damage from the bridge, the officer appreciated that any effort to jettison the mangles remnants of this missile could perhaps lead to greater damage to the ship and hence decided against it. With fires raging around the bridge, he tried out the KASHTAN and finding it operational he steered his ship away from INS Shakti by using main engines, keeping the burning side to the lee.

Once the immediate safety of his ship was assured and danger to INS Shakti avoided, Lieutenant Commander Mohammud Abdul Raihan Subhan activated the ship's damage control parties. He had the fire under control in ten minutes and finally extinguished barely thirty minutes after the mishap. Shortly thereafter power and communication were restored and the ship reverted to cruising station, scarred but battle worthy.

The cool, calm, collect and confident manner in which Lieutenant Commander Mohammud Abdul Raihan Subhan handled the precarious situation without the least thought to his personal safety was in the highest traditions of the Indian Navy.

12. SUB LIEUTENANT HOMI DADY MOTIVALA (02015-B).

(Effective date of award : 30th December, 1981)

Sub Lieutenant Homi Dady Motivala was the Gunnery Officer of the Indian Naval Ship commanded by Lt. Cdr. Mohammud Abdul Raihan Subhan which caught fire on the 30th December, 1981, due to a missile explosion during practice firing. In spite of being ordered to remain at his shelter station, in utter disregard to his personal safety, this officer sought the permission of his Commanding Officer and organised fire fighting. He then took charge of the damage control party on the bridge catwalk and was right through at the forefront of his men. Undeterred by the raging fire, he, at serious risk to his life, personally supervised the fire fighting operation till the fire was brought under control.

This action of Sub Lieutenant Homi Dady Motivala was in the highest traditions of the Indian Navy.

13. SHRI JAI PRAKASH, ELECTRICAL ARTIFICER (POWER) (052484-W),

(Effective date of award : 30th December, 1981)

Shri Jai Prakash was the Electrical Artificer (power) of the Indian Naval Ship commanded by Lt. Cdr. Mohammud Abdul Raihan Subhan which caught fire on the 30th December, 1981, due to a missile explosion during practice firing. Realising the extreme gravity of the situation, he, of his own accord, rushed to the scene of the fire and joined the damage control party under the command of Sub Lt. Homi Dady Motivala engaged in bringing the fire under control.

The action of Shri Jai Prakash, Electrical Artificer (power), was in the best traditions of the Indian Navy.

14. LIEUTENANT COMMANDER KAMALDEEP SINGH SANDHU, NM (01067-Z).

(Effective date of award : 10th January, 1982)

Lieutenant Commander Kamaldeep Singh Sandhu was one of the Naval Helicopter pilots on the Indian Antarctica Expedition 1982. On the 10th January, 1982, information was received by him that a helicopter secured on an ice-shelf along with a snow mobile was in distress as the ice-shelft was cracking. With total disregard to personal safety Lt. Cdr. Sandhu proceeded to the spot, retrieved the helicopter and was

airborne in a few minutes. He then proceeded to the Base Camp to warn the team of scientists about the immediate danger to their lives from the breaking ice-shelf. This timely warning saved the lives of the scientists of the Indian Expedition. On return from the Base Camp, using an improvised rope hooked to the cargo sling, he daringly retrieved the snow mobile without which the expedition would have been seriously handicapped.

Again during this expedition on the 15th January, 1982, when our scientific team landed at Dakshin Gangotri Camp for setting up a data logging station, the weather started deteriorating rapidly. In extremely hazardous circumstances and under the gravest risk to his life, Lt. Cdr. Sandhu undertook to evacuate the scientist back to the ship over a distance of 95 Kms. without even the assistance of a co-pilot.

Throughout the expedition to Antarctica, Lieutenant Commander Kamaldeep Singh Sandhu displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a very high order.

15. 9080689 LANCE NAIK BAL RAJ JAK LIGHT INFANTRY.

(Effective date of award : 17th January, 1982)

On the 17th January, 1982, at about 1730 hours, a gang of five dacoits waylaid and robbed a tonga and other passers-by near village Chandan in Meerut District. When some villagers and police reached the spot, the, bandits hid in a nearby sugarcane field. On being surrounded, the dacoits opened fires and tried to escape towards the forest under the cover of fire.

Hearing the cries for help from the villagers, Lance Naib Bal Raj voluntarily rushed to the spot along with two other personnel. Seeing one of the dacoits trying to escape, Lance Naik Bal Raj, though unarmed, overpowered him after a chase which culminated in a prolonged struggle in which the other Rank grappled with the dacoits and eventually succeeded in wresting the loaded gun from the desperado. The police had, meanwhile, shot dead one dacoit and apprehended another.

In this act Lance Naik Bal Raj displayed a high sense of selfless civic duty and undauted courage in the best traditions of the Army.

16. JC-108920 NAIB SUBEDAR DARWAN SINGH GARHWAL RIFLES.

(Effective date of award : 20th January, 1982

Naib Subedar Darwan Singh, as post Commander of a strategically located post, had been constantly and closely monitoring the move, presence and activities of the hostiles in the area of his responsibility. He was able to cultivate very reliable sources. On the 20th January, 1982, at approximately 1930 hours, Naib Subedar Darwan Singh came to know through his sources that one or two Mizo National Front hostiles had come to a particular house in the village. He was also informed that one of the hostiles was armed and was carrying a large amount of illegally collected money. Appreciating the seriousness of the situation and the necessity of time action, he immediately collected a party of 15 other Ranks and rushed to the village. On reaching the vicinity of the house, he ordered a cordon around the house and without hesitation and with no concern for his life burst into the house in which the hostile was hiding. As Naib Subedar Darwan Singh entered the house, the hostile threatened him with a pistol. Naib Subedar Darwan Singh, however, with great courage overpowered him single handedly in spite of sustaining injuries and serious bruises till his men were able to come to his aid to aprehend the hostile.

In this action Naib Subedar Darwan Singh displayed courage, initiative and exceptional devotion to duty.

17. MAJOR RANVIR SINGH SHEKHAWAT (IC-19197) SIKH. *(Posthomous)*

(Effective date of award : 19th February, 1982)

On the 19th February, 1982, Major Ranvir Singh Shekhawat was detailed to lead a convoy of 3 vehicles carrying men and ration from Imphal to Ukhrul. At about 1000 hours the convoy, while negotiating a bend, was fired upon by hostiles in a well planned ambush. The intensity of their fire was so severe that the front vehicle in which he was travelling was immobilised. Major Ranvir Singh Shekhawat with complete disregard to his personal safety, jumped out of the vehicle and returned the fire of the hostiles after rallying his men. Fnding most of his men killed or seriously injured, he continued single-handedly in engaging the hostiles till he was mortally wounded by being hit in his chest. Despite this, Major Ranvir Singh Shekhawat, clung to his weapon till his death and prevented the hostiles from taking it away.

Major Ranvir Singh Shekhawat thus displayed exemplary courage, gallantry, devotion to duty and inspiring leadership.

18. 3367667 SEPOY MOHINDER SINGH. SIKH.

(Effective date of award : 19th February, 1982)

On the 19th February, 1982, Sepoy Mohinder Singh was manning the Light Machine Gun mounted on his vehicle in the second vehicle of a convoy consisting of three vehicles. On the way, the convoy was ambushed by the hostiles. Unmindful of the intensity of the fire which came from all directions, Sepoy Mohinder Singh immediately returned the fire with his Light Machine Gun. However, some stray bullets of the hostiles hit his Light Machine Gun damaging it to such an extent that it became ineffective. Undaunted he immediately jumped out of the vehicle and taking a rifle from a dead comrade started returning the fire at the hostiles. When his ammunition had finished, he crawled back to take two more magazines from another dead comrade and continued firing thereby killing/injuring some hostiles. By his grit and determination, he effectively pinned down the hostiles preventing them from looting the last two vehicles. By this brave action, Sepoy Mohinder Singh besides saving the lives of his comrades also ensured that no weapons or ammunition in these vehicles were taken away by the hostiles.

In this action Sepoy Mohinder Singh displayed conspicuous gallantry, exemplary courage, determination and devotion to duty of a very high order.

19. MAJOR OM PARKASH DESWAL (IC-23711) BIHAR.

(Effective date of award : 13th April, 1982)

On the 13th April, 1982, Major Om Parkash Deswal led a column of 52 men in a concerted operation to flush out a group of armed insurgents from Kadam Pokpi village. Having reached the village, he established an effective cordon in the North and East of the village.

On orders from his Commanding Officer, he immediately rushed to reinforce another team under severe pressure from the extremists. Major Om Parkash Deswal immediately took over command. Seeing a group of extremists trying to escape to the south he engaged this group. However, another group of extremists immediately followed in the same direction. Major Om Praash Deswal ordered the second column to cut off the escape route of these extremists. But in the attempt to do so Captain Ajit Singh, the leader, was hit in the head by a bullet and he fell down.

Major Om Parkash Deswal spotting four extremists trying to escape under cover of a bund, ordered them to surrender. However, the extremists opened fire, since his carbine was outraged he crawled to within the range of the hostile fire. He shot and wounded one extremist, who was later identified as a hard core rebel, a jail escapee and recovered an automatic rifle from him.

Major Om Parkash Daswal was subject to heavy fire from double storey house on the flank and from the front. Disregarding his personal safety, Major Om Prakash Deswal engaged the extremists from his exposed position, shot and wounded another extremist, later identified as Romee Singh, another hard core member.

Major Om Parkash Deswal later crawled to where Captain Ajit Singh lay unconscious and carried him to safety to a nearby bund from where he was eventually evacuated to the Regimental Aid post. This timely action resulted in the saving of life of Captain Ajit Singh.

Major Om Parkash Deswal thus displayed conspicuous gallantry, exceptional courage and devotion to duty of a high order.

20. 4244707 HAVILDAR PHILMON KUJUR BIHAR.

(Effective date of award : 13th April, 1982)

On the 13th April, 1982, information was received that some armed extremists were hiding in Mayai Loikai in village Kadampokpi Khunau (Imphal). A Battalion of Bihar Regiment immediately rushed and cordoned the village and started search operations. Havildar Philmon Kujur formed part of the search team led by Major Om Parkash Deswal. At approximately 0815 hrs., the extremists opened sudden, accurate and heavy fire on the other search team led by Captain Ajit Singh in the southern part of the village. Major Deswal and his team rushed to the place of firing where they found Captain Ajit Singh had sustained a bullet injury in the head and had fallen unconscious.

A group of 4 extremists was then escaping along a bund In the firing three extremists were wounded. The fourth extremist, however, tried to escape. In utter disregard to his personal safety, Havildar Philmon Kujur promptly chased the fleeing extremist and captured him along with a country made pistol.

Havildar Philmon Kujur then volunteered to help Major Deswal in extricating Captain Ajit Singh. In spite of heavy and accurate fire from the extremists, they crawled out to where Captain Ajit Singh was lying wounded and without caring for their personal safety, picked up the body of the wounded officer and carried him to safety behind bund, wherefrom he was evacuated to the Regimental Aid post.

In apprehending an extremist and later in saving the life of a wounded officer, Havildar Philmon Kujur displayed gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

21. 2659644 HAVILDAR CHHOTU SINGH. GRENADIERS.

(Effective date of award : 15th May, 1982)

On the 15th May, 1982, at 1530 hours, a notorious gang of dacoits attacked Bida village in the Jaisalmer district of Rajasthan. This was their ninth raid on the village.

Havildar Chhotu Singh, who was on annual leave in this village, hearing the shots fired by the dacoits, immediately occupied a vantage point and opened effective fire on the rampaging dacoits. The dacoits, taken completely by surprise due to this unexpected fire, fled in disarray leaving behind their booty of ornaments and livestock. Havildar Chhote Singh, who had fired 13 rounds, managed to kill a notorious dacoit leader named Sajjan Khan. The dacoits made desperate attempts to retrieve the body of their leader but were foiled in their attempts to do so by the accurate and heavy volley of fire of Havildar Chhotu Singh.

By this act of bravery and initiative in sigle handedly combating a gang of dacoits, Havildar Chhotu Singh successfully aborted a raid on Bida. His singular act of courage was acclaimed by the local administration and the people of his village.

22. SQUADRON LEADER SHARWAN KUMAR BHATIA (11316) FLYING (PILOT).

(Effective date of award : 20th May, 1982)

During the month of April, 1982, a task involving placement of heavy machinery and its removal after the function was entrusted to Sqn. Ldr. Sharwan Kumar Bhatia. The locations were at a serious of extremely small patches of ground, all about 6000' altitude along the Himalayan border where it looked almost impossible to land an MI-8 helicopter with such a heavy cargo.

Squadron Leader Sharwan Kumar Bhatia (11316), Flying (Pilot), faced the task with utmost courage. In a series of one hundred and twenty eight landings spread over a continuous period of ninety days, flying under extremely unfavourable conditions in all aspects and the area of operations through the deep hazardous gorges of Himalayas and stresses and strains. Squadron Leader Sharwan Kumar Bhatia completed the task and came out as the "Complete pilot" of the Indian Air Force. An error of a minute nature over such a long period, at any stage, would have meant grave loss and a total disaster for him.

Squadron Leader Sharwan Kumar Bhatia thus displayed sustained courage and a high degree of professional skill, competence and devotion to duty.

23. FLIGHT LIEUTENANT BIKRAM DEV SINGH (13573).

FLYING (PILOT).

(Effective date of award : 25th June, 1982)

On the 24th June, 1982, information was received about 19 Army personnel having been stranded near INDRAJOT PASS north of DHARAMSALA. A rescue aircraft was launched and it was found that the personnel were on a rock at a height of 14500 ft. AMSL and on the mountain side with a gradient of 75°. The personnel were surrounded by about 10 feet of fresh snow. It was appreciated that no landing could be attempted and that winching operation will be required to rescue the personnel. Food, medicine and blankets were dropped at the site and the aircraft returned to base late in the evening. On the 25th June, 1982, Flight Lieutenant Bikram Dev Singh, Flying (Pilot), was detailed to commence rescue operations in Cheetah aircraft fitted with rescue hoist. He reached the site at 0900 hours. The weather at that time was fair but the wind speeds of the order of about 40 knots. After a thorough recce the aicrarft was brought to hover about 15 ft. above the stranded personnel. Because of the very steep incline and location of the personnel, the aircraft had to be hovered leaving very small margin between the rotor and cliff side. Hovering under such conditions of high altitude, strong winds and very difficult terrain, is a nightmarsh task requiring exceptional skill. The helper was lowered at the site and two army personnel were hoisted up and taken to YOL. On returning to the site, it was found that the weather had sharply deteriorated. Clouds had rolled in over the area, the visibility had dropped to 100 metres and the wind speed had picked up to about 50 to 55 knots. In spite of this, Flt Lt Bikram Dev Singh continued the rescue operations with cool professionalism and in two more trips evacuated in all six personnel. By 1730 hours all stranded personnel had been brought to YOL.

Flight Lieutenant Bikram Dev Singh thus displayed courage, a high degree of professional skill, competence and devotion to duty of an exceptional order.

24 MAJOR KAMAL KUMAR SHARMA (IC-34205) GORKHA RIFLES.

(Effective date of award : 7th July, 1982)

Major Kamal Kumar Sharma was the Company Commander of a prominent post in an insurgency sector. By careful planning, he was successful in establishing an effective net work of informers and agents amongst the civil population. On being informed that some hard core hostiles had collected heavy taxes from the locals and that one civilian was to make payment on 8th July, 1982, he immediately drew up a plan to apprehend the hostiles. He led a patrol disguised in civilian clothes carrying only carbides hidden in civil type of satchels and moved over 40 kilometres of impregnable jungle. On reaching the appointed location, he learnt that the hostiles had moved to another area. Undaunted he motivated his men to continue following the tail through trackless jungle terrain. Having fixed the whereabouts of the hostiles and having identified them, he deployed his patrol in such a manner that the target area was effectively scaled. Major Kamal Kumar Sharma then surprised the hostiles by leading his men into a hut where the hostiles were. Though surprised, one hostile reacted and aimed his revolver at Major Kamal Kumar Sharma.

Major Kamal Kumar Sharma, however, physically grappled with the hostile and in the scuffle that ensued, quickly overpowered and disarmed him. Both the hostiles captured in this operation were identified as hard-core underground men.

Major Kamal Kumar Sharma thus displayed gallantry, perseverance, devotion to duty and inspiring leadership.

25. SHRIMATI RAJ KUMAR BIMOLATA DEVI, W/O SHRI L. LALIT SINGH, AGED 36 YEARS, KEISAMTHONG LAISHRAM LEIRAK, IMPHAL, MANIPUR-795001.

(Effective date of award : 6th August, 1982)

On the morning of the 6th August, 1982, two visitors came to the house of Shri L. Lalit Singh of Keishamthong Laishram Leirak, Imphal. Shri Lalit Singh received them in the drawing room. While one of them took his seat, the other moved to the verandah of the house. Smt. Raj Kumar Bimolata Devi, wife of Shri L. Lalit Singh suspecting the intention of the visitors maintained an unobstrusive watch from behind a curtain.

During the conversation that followed, the visitors demanded that they should get a huge sum. On Shri Singh expressing indignation at this, the visitor took out a loaded .38 revolver from his pocket and raised his hand to shoot Shri L. Lalit Singh from a close range. Suddenly Smt. Bimolata Devi rushed out and grappled with the visitor and raised an alarm. This unnerved the visitor who ran towards Kaishamthong. When he did not surrender on being asked to do so, there ensured an encounter between him and the police in which he was killed. Later, he was identified as Ngangom Hitler Singh alias Rajan Singh S/o Ng. Ibochou Singh of Brahmapur Tinsubam Leirak, a hard-core leader of an unlawful organisation. One .38 revolver with one empty case and 6 live rounds were recovered from his possession. The other visitor escaped.

Smt. Raj Kumar Bimolata Devi thus displayed rare presence of mind and valour of a high order.

No. 15-Pres/83.—The President is pleased to approve the award of the "Param Vashisht Seva Medal" to the undermentioned officers for distinguished service of the most exceptional order :—

1. Lieutenant General Arunkumar Shridhar Vaidya (IC-1701), MVC, AVSM, Armoured Corps.
2. Lieutenant General Yeshwant Dattatreya Sahasrabuddha (IC-1603), Army Service Corps.
3. Lieutenant General Man Mohan Lal Ghai (IC-3954), Enginers.
4. Lieutenant General Kanwal Kishan Hazari (IC-4468), AVSM, Artillery.
5. Lieutenant General Manohar Singh Sodhi (IC-1592), Signals.
6. Vice Admiral Sardari Lal Sethi, AVSM, NM, (00052 T).
7. Vice Admiral Anil Kumar Bhatia, AVSM, VSM (50005 Y).
8. Surgeon Vice Admiral Gopala Kuppuswamy, VSM (75006 T) (Retired).
9. Air Marshal Kanwar Iqbal Singh Chhabra, AVSM, (3831), Flying (Navigation).
10. Air Marshal Minoo Jehangir Dotiwalla (3839), Flying (Pilot).
11. Air Marshal Satish Chandra Lal (3793), Aeronautical Engineering (Electronics).
12. Air Marshal Kapil Dev Chadha, VM (3845), Flying (Pilot).
13. Major General Narindar Singh (IC-3935), Armoured Corps.
14. Major General Sudarshan Lal Malhotra (IC-4789), AVSM, Infantry.
15. Major General Naresh Kumar (IC-5844), Artillery.
16. Major General Vijay Kumar Nayar (IC-5858), SM, Infantry.
17. Major General Asoke Banerjee (MR-381), Vr. C., Army Medical Corps.
18. Major General Stanely William Burrett (IC-1589), AVSM Engineers (Retired).
19. Major General Brij Nath Dhur (IC-2381), Army Ordnance Corps (Retired).
20. Major General (Miss) Vattarangath Gouri (NR-680965), Military Nursing Service (Retired).
21. Air Vice Marshal Shri Krishna Chandra Gupta, VSM (3568) Administrative.

No. 16-Pres./83.—The President is pleased to approve the award of the "Ati Vishisht Seva Medal" to the undermentioned officers for distinguished service of an exceptional order :—

1. Vice Admiral Jayant Ganpat Nadkarni NM, VSM (00086-W).
2. Major General Devinder Nath Chibber (IC-2321), Army Education Corps.
3. Major General Lalgudi Mahalingam Rajgopal (IC-7191), Electrical & Mechanical Engineers.
4. Major General Jag Mohan Rai (IC-5831), Engineers.
5. Major General Purushottam Lal Kher (IC-6405) Vr.C, SM, Mechanised Infantry.
6. Rear Admiral Radhey Shyam Sharma VSM (60027 Z).
7. Brigadier Anand Kumar Pandya (IC-4579), Army Service Corps.
8. Brigadier Gurdayal Singh (IC-5193), Electrical & Mechanical Engineers.
9. Brigadier Arjun Verma (IC-7600) VSM, Signals.
10. Brigadier Bishweshwar Singh Bisht (IC-5377), Artillery.
11. Brigadier Lakshmi Narain Sabherwal (IC-5846) Infanty.
12. Brigadier Virender Pratap (IC-5853), Army Ordnance Corps.
13. Brigadier Ramesh Chander (IC-5824), Electrical & Mechanical Engineers.
14. Brigadier Surinder Nath (IC-6606), VSM, Infantry.
15. Brigadier Avtar Singh Sekhon (IC-4929), Military Farms Corps.
16. Brigadier Narendra Kumar (IC-5976), Army Service Corps.
17. Brigadier Din Bandhu Mukerji (IC-5059), Engineers.
18. Brigadier Satjit Singh (IC-6667), VSM, Artillery.
19. Brigadier Kumar Debakrama Majumdar (IC-6721), Infantry.
20. Brigadier Dalip Singh Sidhu (IC-7025), VSM, Infantry.
21. Brigadier Ishwar Dutt Vasishtha (IC-7043), Infantry.
22. Brigadier Basant Kumar Mahapatra (IC-7053), Armoured Corps.
23. Brigadier Ravinder Sharma (IC-7603), Armoured Corps.
24. Brigadier Harwant Singh (IC-7697), Armoured Corps.
25. Brigadier Sandip Kumar Chaudhuri (IC-8162), Infantry.
26. Brigadier Yogendra Kumar Vadehra (IC-8214), Infantry.
27. Brigadier Ashok Krishna (IC-10069), Infantry.
28. Brigadier Vasanta Rao Raghavan (IC-10150), Infantry.
29. Brigadier Ishwar Chandra Narang (MR-1063), Army Medical Corps (Retired).
30. Commodore Surendra Mohan Misra (40045-K).
31. Commodore Vasant Laxman Koppikar (00180 H).
32. Surgeon Commodore Joginder Singh Lamba (75025 K).

33. Commodore Viswanath Ravindranath, NM, VSM (00194 R), (Retired).
34. Air Commodore Bangalore Venkataramaiah Jaya Rao, (4138), Aeronautical Engineering (Electronics).
35. Air Commodore Anadi Shankar Sarkar, VM (4273), Aeronautical Engineering (Mechanical).
36. Air Commodore Shyam Chand Mehra, VSM (4290), Aeronautical Engineering (Electronics).
37. Air Commodore Kotarapurath Govind Mohanchandra (4316), Administrative.
38. Air Commodore Jagdish Kumar Seth, VM (4403), Flying (Pilot).
39. Air Commodore Man Mohan Sinha, VM (4408), Flying (Pilot).
40. Air Commodore Inder Dev Bhalla (4571), Flying (Pilot).
41. Air Commodore Amolak Ram Anand (4085), Medical (Retired).
42. Colonel Vijay Prabhakar Ranadive (IC-7825), Army Service Corps.
43. Colonel Narsinha Venkatrao Kamat (DR-10054), Army Dental Corps.
44. Group Captain Shreepad Achyut Ranade (3992), Accounts.
45. Group Captain Dalip Singh Sabherwal, VM (4756), Flying (Pilot).
46. Group Captain Indrakanty Gopala Krishna, VSM (5398), Aeronautical Engineering (Mechanical).
47. Group Captain Prithvi Singh Brar, VM (6007), Flying (Pilot).
48. Commander Arogyaswami Joseph Paulraj, VSM (50162 B).

No. 17-Pres./83.—The President is pleased to approve the award of "Bar to Ati Vishisht Seva Medal" to the undermentioned officer for distinguished service of an exceptional order :—

1. Brigadier Jagjit Singh (IC-6601), AVSM, VSM Artillery.

No. 18-Pres./83.—The President is pleased to approve the award of the "Vishisht Seva Medal" to the undermentioned officers for distinguished service of a high order :—

1. Brigadier Rabinder Nath Bhalla (IC-10414), Infantry.
2. Brigadier Darshan Singh (SL-230), Army Physical Training Corps.
3. Brigadier Pullat Mukundan Menon (IC-6912), Electrical & Mechanical Enginers.
4. Colonel Satish Chander Chatrath (IC-7819), Army Ordnance Corps.
5. Colonel Ramdas Bodharao Nadgir (IC-7448), Army Ordnance Corps.
6. Colonel Bharat Bhushan Vishnoi (SL-00215), Signals.
7. Colonel Krishna Murari Singh (IC-7333), Infantry.
8. Colonel Sundararajan Padmanabhan (IC-11859), Artillery.
9. Colonel Sushil Kumar Vij (IC-10507), Signals.
10. Colonel Jal Master (IC-12071), Infantry.
11. Colonel Rajagopal Senthamarai Kannan (IC-12253), Electrical & Mechanical Engineers.
12. Colonel Basudeb Rautray (MR-00949), Army Medical Corps.
13. Colonel (Mrs.) Nirmal Ahuja (MR-01172), Army Medical Corps.
14. Colonel Krishna Nand Sardana (IC-8641), Army Education Corps.
15. Captain Jasbir Singh Virk (60052-F) IN.
16. Acting Captain Puthenmadathil Ittyerah Oommen (70047-Y) IN.
17. Lieutenant Colonel Harinder Singh Sodhi (IC-11010), Armoured Corps.
18. Lieutenant Colonel Kamaljit Singh (IC-12536), Armoured Corps.
19. Lieutenant Colonel Ram Krishan Sharma (IC-7030), Artillery.
20. Lieutenant Colonel Yadav Rai Jetley (IC-12111), Artillery.
21. Lieutenant Colonel Gurpal Singh Chhatwal (IC-15453), Artillery.
22. Lieutenant Colonel Sushil Kumar Sarda (IC-12099), Vr. C. Mahar.
23. Lieutenant Colonel Virendar Mohan Mehta (IC-12533), Gorkha Rifles.
24. Lieutenant Colonel Harkirat Singh (IC-14005), Grenadiers.
25. Lieutenant Colonel Thelapanda Mudappa Muthappa (IC-14214), Bihar.
26. Lieutenant Colonel Gurdev Singh (IC-14367), Dogra.
27. Lieutenant Colonel K. P. Balakrishnan Nambiar (IC-14458), Madras.
28. Lieutenant Colonel Amal Kumar Sanyal (IC-14500), Gorkha Rifles.
29. Lieutenant Colonel Pinaki Basu (IC-15930), Bihar.
30. Lieutenant Colonel Joginder Jaswant Singh (IC-16078), Maratha LI
31. Lieutenant Colonel Raj Kumar Singh (IC-16137), Garhwal Rifles.
32. Lieutenant Colonel Abdul Rasul Khan (IC-20319), Grenadiers.
33. Lieutenant Colonel Kailash Chandra Dhingra (IC-12505), Engineers.
34. Lieutenant Colonel Sharad Chandra Abaji Deshpande (IC-10625), Electrical & Mechanical Engineers.
35. Lieutenant Colonel Kona Kanna Rao (IC-13721), Electrical & Mechanical Engineers.
36. Lieutenant Colonel Vasant Vishnu Prabhudesai (IC-14301), Electrical & Mechanical Engineers.
37. Lieutenant Colonel Sajal Kanti Ghosh (IC-14865), Electrical & Mechanical Engineers.
38. Lieutenant Colonel Girdhar Gopal Agrawal (IC-12011), Army Service Corps.
39. Lieutenant Colonel Baindur Nagesh Rao (IC-12593), Army Ordnance Corps.
40. Lieutenant Colonel B. Rathnakar Shetty (V-172), Remount Veterinary Corps.
41. Lieutenant Colonel Satya Prakash Malhotra (IC-11217), Intelligence Corps.
42. Lieutenant Colonel Mahendra Kumar Seth (MR-01001), Army Medical Corps.
43. Lieutenant Colonel Guntur Buchy Venkata Lakshmana Sastry (IC-7733), Punjab (Retired).
44. Commander Mahendra Singh Rawat (00175-Y).
45. Commander Kewal Krishan Gulati (60059-Y).
46. Commander Perumpacheruvilla Johnson Jacob (00511-K).
47. Surgeon Commander Ashok Kumar Chatterjee (75069-K).
48. Commander Buddhadeb Sengupta (40342-K).
49. Acting Commander Datla Sai Prasad Varma (50199-N).
50. Commander (SDB) Prit Pal Singh (83169-W).

51. Wing Commander Rajinder Kumar Chaudhary (6122), Flying (Navigator), India Air Force.

52. Wing Commander Jaswant Singh Kumar (6186), (Logistics).

53. Wing Commander Ghanshyam Gururani (6387), Aeronautical Engineering (Mechanical).

54. Wing Commander Virendra Kumar Jain (6389), Aeronautical Engineering (Mechanical).

55. Wing Commander Svinder Mohan Singh Chadha (6588), Aeronautical Engineering (Mechanical).

56. Wing Commander Kondaiah Rampati (6813), Aeronautical Engineering (Mechanical).

57. Wing Commander Surinder Mohan Bhatia (7066), Aeronautical Engineering (Mechanical).

58. Wing Commander Satish Govind Inamdar (7189), Flying (Pilot).

59. Wing Commander Dilip Kamalkar Parulkar, VM (7227), Flying (Pilot).

60. Wing Commander Sharanjit Singh (7356), Aeronautical Engineering (Electronics).

61. Wing Commander Sundara Krishna Suresh Sitaram (7910), Aeronautical Engineering (Electronics).

62. Wing Commander Virendra Pradhan (8173), Flying (Pilot).

63. Major Vijay Kumar Bakshi (IC-14208), Artillery.

64. Major Subhash Chandran Nambiar (IC-23889) Maratha LI.

65. Major Kheem Singh (IC-24258), Dogra.

66. Major Asis De (MR-03851), Army Medical Corps.

67. Major Thirumalai Nallan Chakravarthy Vijyasarathy (IC-28826), Madras.

68. Major Raj Kumar Manchanda (IC-16541), Electrical & Mechanical Engineers.

69. Major Perumpillipadi Eravi Ramachandra Nair (SL-1500), Army Service Corps (Catering).

70. Major Govardhan Vyas (MR-02643), Army Medical Corps.

71. Major Des Raj Sharma (IC-26414), Punjab.

72. Surgeon Lieutenant Commander Joseph Idicula (75102-K).

73. Lieutenant Commander Bottengal Krishnan Viswanathan (50276-N).

74. Lieutenant Commander Singaravelu Vaithinathan (40402-Y).

75. Lieutenant Commander Chotu Khan (Special Duties Bandsmen) (84251-B).

76. Lieutenant Commander (SDAF) Navamoni Suguunaraj Samuel (86001-F) (Retired).

77. Squadron Leader Jagdish Chandra Malik (6989), Education.

78. Squadron Leader Gulshan Rai Malhotra (8257), Aeronautical Engineering (Electronics).

79. Sqaudron Leader Pratap Singh (8897), Aeronautical Engineering (Electronics).

80. Squadron Leader Baldev Singh Cheema (8902) Aeronautical Engineering (Mechanical).

81. Squadron Leader Samuel Simon (9184), Administrative.

82. Squadron Leader Jayanti Swarup (9220), Administrative.

83. Sqadron Leader Ramakrishna Somnath (10780), Aeronautical Engineering (Electronics).

84. Squadron Leader Rajvir Yadav (11354), Flying (Navigator).

85. Squadron Leader Rajagopala Sunder Raman (11977), Aeronautical Engineering (Electronics).

86. Captain Hitendra Narayan Ghosh (IC-33386), Gorkha Rifles.

87. Captain Dharam Raj Singh (IC-36332), Mahar.

88. Captain Vijay Kumar Wadia (MR-3717), Army Medical Corps.

89. Flight Lieutenant Manmohan Singh (11953), Logistics.

90. Sub. Lieutenant Farokh Framroze Tarapore (02296-T).

91. Flying Officer Gautam Kumar Dasgupta (15497), Aeronautical Engineering (Electronics).

92. JC-47838 Sub Major Budhi Bahadur Gurung, Gorkha Rifles.

93. JC-61898 Sub Maj Harka Bahadur Gautam, Gorkha Rifles.

94. JC-61444 Sub Major Piara Singh, Army Ordnance Corps.

95. Pal Singh Sandhu, Master Chief Electrical Artificer First (048195-K).

96. Methil Bhaskaran, Master Chief Electrical Artificer Air Radio First (050147-Y).

97. Parameswaran Vijayan, Master Stores Chief Petty Officer First Class (063715-H).

98. Mohinder Singh, Master Chief Airman (Safety Equipment) First (064259-W) (Retired).

99. 201281 Master Warrant Officer Bishamber Nath Bhasin, Air Frame/Fitter.

100. 208070 Master Warrant Officer Sant Kumar Workshop Fitter (C&SMW).

101. Kanwal Nain Singh, Master Chief Aircraft Artificer II (091720-F).

102. JC (NYA)-5744942 Nb/Sub Birendra Singh Thapa, Gorkha Rifles.

103. Swadesh Ranjan Adhikari, Chief Petty Officer Radio (Telegraphist) (087894-K).

104. 243802 Junior Warrant Officer Malamal Neelancherry Unnikrishnan, Radar Fitter.

105. Shri K. Zuheto Swu (2007), KC, Commandant, Border Security Force.

106. Shri Malhar Purushottam Chitnis, Commandant, Central Reserve Police Force.

No. 19-Pres./83.—The President is pleased to approve the award for "Bar to Vishisht Seva Medal" to the undermentoined officer for distinguished service of an exceptional order :—

1. Colonel Jagdish Narain (IC-11728), VSM, Engineers.

No. 20-Pres./83.—The President is pleased to approve the award of the "Param Vishisht Seva Medal" to the undermentioned officer for distinguished service of the most exceptional order :—

1. Lieutenant General Tilak Bahadur Nanda (IC-1001) Engineers.

No. 21-Pres./83.—The President is pleased to approve the award of "Vishisht Seva Medal" to the undermentioned officer for distinguished service of a high order :—

1. JC-39323 Subedar Major (Honorary Captain) Viswanath Bhosle, Vir Chakra, Mahar.

S. NILAKANTAN, Dy. Secy.
to the President.

MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS

(HAJ CELL)

New Delhi, the 9th February 1983

RESOLUTION

No. M(Haj)118-1/1/81.—Under their Resolution No. M(Haj)118-1/1/81, dated 10th November, 1981, the Government of India had announced the reconstitution of the Central Haj Advisory Board for the year 1981-82.

2. The Government of India have now decided to extend the life of the Central Haj Advisory Board, as constituted for 1981-82, till November, 1983.

ORDER

ORDERED that a copy of this Resolution be communicated to all the Ministries of the Government of India, the Prime Minister's Office, the Cabinet Secretariat, Department of Parliamentary Affairs, Lok Sabha and Rajya Sabha Secretariat, all State Governments/Centrally Administered areas, the Haj Committee, Bombay, all State Haj Committees, and Mogul Lines Ltd., Bombay for information.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India.

M. H. ANSARI, Jt. Secy. (Haj)

DEPARTMENT OF SCIENCE & TECHNOLOGY

New Delhi-1, the 22nd February 1983

No. 1/4/82-CTE.—It is notified for general information that the Government of India have nominated Shri Shivraj V. Patil, Minister of State for Science and Technology, Electronics and Ocean Development, New Delhi as a Member of the Society (Council of Scientific & Industrial Research), reconstituted for a period of two years with effect from 6th June, 1982 vide notification No. 1/4/82-CTE, dated 1st July, 1982, for the residue term of the present Society till 5th June, 1984.

G. S. SIDHU, Secy.
for CSIR Affairs and Director General,
Scientific & Industrial Research, New Delhi

DEPARTMENT OF ENVIRONMENT

New Delhi, the 18th February 1983

RESOLUTION

SUBJECT :—*Constitution of a Board for Doon Valley and Adjacent Watershed Areas of Ganga and Yamuna.*

No. 2/19/81-HCT-Env.5.—It has been decided to extend the term of the Board for Doon Valley and Adjacent Watershed Areas of Ganga and Yamuna to study and review the developmental package and suggest guidelines for environmental management for achieving sustained development with minimal environmental degradation constituted vide this Department's Resolution No. 2/19/81-CHT/Env., dated the 18th August, 1982 for a further period of One Year with effect from 3rd February 1983.

2. The following shall be the revised Composition of the Board :—

Chairman

(1) Shri Digvijay Sinh, Deputy Minister for Environment.

Members

(2) Prof. M. G. K. Menon, Member, Planning Commission,

(3) Shri Baldev Singh Arya, Minister for Transport and Hill Development, Uttar Pradesh.

(4) Shri Harish Chandra Singh Rawat, Member of Parliament, 52-54, North Avenue, New Delhi.

(5) Shri B. B. Vohra, Chairman, National Committee on Environmental Planning.

(6) Shri R. P. Khosla, Chief Secretary, Government of Uttar Pradesh, Secretariat, Lucknow.

(7) Shri Arun Singh, 30, Firozeshah Road, C-1, Diwan Shree Apartments, 1st Floor, New Delhi.

(8) Shri Gurdial Singh, 99, Sector 8-A, Chandigarh.

(9) Dr. T. N. Khoshoo, Secretary, Department of Environment.

(10) Shri N. D. Bachkheti, Inspector General of Forests, Ministry of Agriculture, Krishi Bhavan, New Delhi.

(11) Prof. Ranjit Singh, Horticulture Division, Indian Agricultural Research Institute, Pusa Road, New Delhi.

(12) Shri N. D. Jayal, Joint Secretary, Department of Environment.

Member-Secretary

(13) Dr. S. Maudgal, Director, Department of Environment.

3. The Chairman will have the authority to coopt other Members as and when necessary.

4. TA/DA, as per rules admissible, would be met by the Department of Environment for non-official members.

5. The terms of reference of the Board will be :—

(a) Review of the package of proposed developmental projects in this region and provide guidelines for environmental management so as to optimally utilise the regional resources;

(b) Evolve an effective implementation mechanism for executing mitigative/ameliorative measures for checking further environmental degradation and/or improving the environment.

6. The term of the Board shall now be upto 3rd February, 1984.

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to the Chairman and all other Members of the Board for Doon Valley and Adjacent Watershed Areas of Ganga and Yamuna.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

T. N. KHOSHOO, Secy.

MINISTRY OF AGRICULTURE

(DEPARTMENT OF AGRICULTURE AND COOPERATION)

New Delhi, the 26th February 1983

RESOLUTION

No. 28-2/80-SC(T).—The question of setting up a Central body to serve as a policy planning, coordinating and monitoring agency for issues concerning the health and scientific management of the country's land resources has been under the consideration of the Government of India for some time past. It has now been decided to set up in the Ministry of Agriculture (Department of Agriculture & Cooperation), New Delhi, the *National Land Board* and the *National Land Resources Conservation and Development Commission* with the following composition, role and functions :—

2. *NATIONAL LAND BOARD*—

1. *Composition*

Chairman

(i) Union Minister of Agriculture.

Members

(ii) Union Minister of Irrigation.

(iii) Union Minister of Works & Housing.

(iv) Union Minister looking after Environment.

(v) Member, Planning Commission (Incharge of Agriculture).

(vi) One Minister from each of the States/Union Territories.

Member-Secretary

(vii) Land Resources Commissioner (who will also be the Member-Secretary of the National Land Resources Conservation & Development Commission).

II. *Role and Functions*

The recommendations of the National Land Resources Conservation and Development Commission which involve larger policy issues shall be placed before the National Land Board for taking a final view.

III. *Meetings of the Board*

The Board shall meet at least once in a year.

3. *NATIONAL LAND RESOURCES CONSERVATION AND DEVELOPMENT COMMISSION*

I. *Composition*

Chairman

(1) Member, Planning Commission (Incharge of Agriculture).

Members

(ii) Secretaries—Agriculture, Irrigation, Works & Housing, Rural Development and Environment Ministries/Departments of the Government of India.

(iii) Inspector General of Forests, Government of India.

(iv) Chairman, Central Water Commission, Government of India.

(v) Chairman, National Committee on Environmental Planning.

(vi) Director-General, Indian Council of Agricultural Research.

(vii) Agriculture Commissioner, Department of Agriculture & Cooperation, Government of India.

(viii) Five representatives from the States (One from each region. Membership to be rotated within the region amongst the member States on yearly basis—representatives to be nominated preferably by the concerned State Land Use Boards).

(ix) Six experts in the field of Flood Control, Land Reclamation, Development of Deserts/Hill Areas/Drought Prone Areas/Soil Conservation/Town and Country Planning/Reclamation of Marshy and Wet Lands, etc.

Member-Secretary

(x) Land Resources Commissioner (who will also act as Member-Secretary of the National Land Board).

The Commission may invite/coopt experts as may be necessary as well as take up studies or set up expert groups for the purpose of preparing papers/reports on specified problems.

II. *Role and Functions*

(i) To formulate a National Policy and perspective plan for conservation, management and development of land resources of the country, taking into account appropriate land use and soil capability and other factors;

(ii) To make an overall review of the progress of implementation of schemes and programmes connected with conservation and development of soils and allied matters and, in particular, the following :—

(a) Improvement and conservation of soil on farmers' fields;

(b) Integrated land management in the catchment of river valley projects and flood prone rivers;

(c) Social forestry;

(d) Flood control;

(e) Reclamation of alkaline and saline soils;

(f) Reclamation of ravines;

(g) Reclamation of marshy and wet-lands;

(h) Improvement and maintenance of soil fertility;

(i) Drought Prone Area and Desert Development; and

(j) Town and Country Planning.

(iii) To consider and review proposals concerning soil surveys and general assessment of land resources;

(iv) To take measures for creating a general awareness about the importance and problems of proper soil management;

(v) To consider measures for ensuring that good agricultural land is not indiscriminately diverted to non-agricultural purposes;

(vi) To coordinate the work of State Land Use Boards; and

(vii) To submit its recommendations involving larger policy issues at the national level to the National Land Board for consideration.

ORDER

ORDERED that a copy of this Resolution be communicated to all concerned.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

S. P. MUKHERJI, Secy.

DEPARTMENT OF INDUSTRIAL DEVELOPMENT

New Delhi, the 18th February 1983

RESOLUTION

No. 07011/2/83-Salt.—In continuation of this Ministry's Resolution No. 07011/1/80-Salt, dated 14-10-81 and 15-4-82 reconstituting the Rajasthan Regional Advisory Board for Salt the Government of India have decided to nominate the following persons to represent the interest of salt industry in Himachal Pradesh :—

1. Thakur Kaul Singh, MLA, Himachal Assembly.
2. Shri Brahma Nand, Vice-Pradhan, Gram Panchayat, P.O. Bhararoo, Tehsil Joginder Nagar, Distt. Mandi (H.P.).

ORDER

ORDERED that this Resolution be communicated to all State Governments, All Ministries of the Government of India, Planning Commission, Cabinet Secretariat and Prime Minister's Secretariat.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India, Part I, Section 1.

S. B. GOEL, Dy. Secy.

MINISTRY OF EDUCATION AND CULTURE

(DEPARTMENT OF EDUCATION)

New Delhi, the 21st February 1983

RESOLUTION

No. E.11011/34/81-H.C.Unit.—The Government of India have decided to constitute a Hindi Salahkar Samiti for the Ministry of Education and Culture. The composition, functions etc. of the Samiti will be as under :—

Composition

Chairman

1. Minister of State in the Ministries of Education & Culture, and Social Welfare.

Vice-Chairman

2. Deputy Minister in the Ministries of Education & Culture, and Social Welfare.

Two Representatives from the Lok Sabha

Members

3. Smt. Sumati Oraon, Member of Lok Sabha.
4. Shri Baburao Paranjpe, Member of Lok Sabha.

Two Representatives from the Rajya Sabha

5. Shri Rampujan Patel, Member of Rajya Sabha.
6. Shri Ram Bhagat Paswan, Member of Rajya Sabha.

Two Representatives from the Committee of Parliament on Official Language

7. Prof. K. K. Tiwari, Member of Lok Sabha.
8. Shri Amar Rai Pradhan, Member of Lok Sabha.

Unofficial Members

(Representatives from Voluntary Organisations, etc.)

9 Secretary, Akhil Bharatiya Hindi Sanstha Sangh, New Delhi.
10. Secretary, Nagari Pracharni Sabha, Dr. Rajendra Prasad Road, New Delhi.
11. President, Kendriya Sachivalaya Hindi Parishad, XY-68, Sarojini Nagar, New Delhi-110 023.
12. Shri V. D. Krishnan Nimbiar, Secretary, Kerala Hindi Sahitya Mandal, Kerala.
13. Smt. Ragini Misra, D-II/312, Chanakya Puri, Vinay Marg, New Delhi.
14. Shri Prabhat Shastri, General Secretary, Hindi Sahitya Mandal, Prayag (U.P.), Kavi Kutir, Daragunj, Allahabad-211 006.
15. Dr. Shashi Tiwari, Sanskrit Department, Maitreye College, New Delhi.

Official Members

(Representatives of the Department of Official Language, Ministry of Home Affairs)

16. Secretary, Department of Official Language and Hindi Adviser to the Government of India.
17. Joint Secretary, Department of Official Language, Ministry of Home Affairs.

(Representatives of the Ministry of Education & Culture and its Subordinate/Attached Offices)

18. Education Secretary.
19. Additional Secretary
20. Educational Adviser.
21. Educational Adviser (Technical).
22. Joint Secretary (Admn.).
23. Joint Educational Adviser (Language & Sanskrit).
24. Director General, Archaeological Survey of India.
25. Director, National Archives of India.
26. Director, National Museum.
27. Controller of Accounts, Ministry of Education & Culture.
28. Director, Central Hindi Directorate.
29. Director, Adult Education Directorate.

Member-Secretary

30. Director (Hindi)

II. *Functions*

This Samiti will advise the Ministry and its attached/subordinate offices on matters relating to progressive use of Hindi for official purposes and on matters ancillary and incidental to the above.

III. *Tenure*

The tenure of the Samiti shall ordinarily be three years from the date of its first composition provided that:

(a) a member, who is a Member of Parliament, ceases to be a member of the Samiti as soon as he ceases to be a Member of Parliament.

(b) Ex officio members of the Samiti shall continue as members so long as they hold the office by virtue of which they are members of the Samiti.

(c) if a vacancy arises on the Samiti due to death etc. or resignation of the member, the member appointed in that capacity shall hold office for the residual tenure of three years.

IV. *Quorum*

The quorum for the meetings of the Samiti shall be 1/3rd of total membership of the Samiti.

V. *General*

(i) The Samiti may nominate additional members as coopted members and invite experts to attend its meeting as may be considered necessary.

(ii) The Headquarter of the Samiti shall be at New Delhi.

VI. *Travelling and other Allowances*

The non-official members will be paid travelling and daily allowances for attending the meetings of the Samiti.

ORDER

ORDERED that a copy of this Resolution be communicated to all the members of the Samiti, all State Governments and Union Territory Administrations, Prime Minister's Office, Cabinet Secretariat, Department of Parliamentary Affairs, Lok Sabha Secretariat, Rajya Sabha Secretariat, President's Secretariat, Planning Commission, Comptroller and Auditor General of India and all the Ministries/Departments of the Government of India.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

D. S. MISRA, Jt. Secy.

PRINTED BY THE MANAGER, GOVERNMENT OF INDIA PRESS, FARIDABAD AND PUBLISHED BY THE CONTROLLER OF PUBLICATIONS, DELHI, 1983